चन्दामामा
अप्रैल १९९२
4.

LUXOR SUPER OFFER
FREE!
LUXOR COLOUR FUN BOOKS
Buy
ANY OF THESE
4 DISNEY
PEN SETS
AND GET
AN EXCITING
LUXOR COLOUR
FUN BOOK FREE!
ENTER THE
MAGIC WORLD OF
LUXOR COLOUR.
ENTER THE
WORLD OF
EXCITEMENT.
Luxor®
Everyday, India writes the Luxor way.
Luxor Pen Company, 5631, First Floor, Qutab Road, New Delhi-110055, Tel: 514885, Cable: HITECPEN.

Don't you owe the
See my tail
It's out of a
Fairy Tale
Nice 'n' funny
I'm a Bunny
Foxy is my name
But I'm oh-so tame
Your Bear Hugs
are warmer
than mine

अप्रैल १९९२

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

अपने ज्ञान को सब में बंटो

तुम में से काफी अपनी वार्षिक परीक्षा दे चुके होंगे, और कुछ दे रहे होंगे। परीक्षा दे चुकने के बाद तो फिर मज़े हैं। छुट्टी मनाओ और आराम करो। पर एक बार यह भी सोचो कि जीवन में शिक्षा की भूमिका क्या है।

क्या शिक्षा का मतलब डिग्री प्राप्त करना, और नौकरी पा जाना, ही है? दरअसल, शिक्षा का मतलब होना चाहिए जीवन-नहीं, समग्र जीवन के प्रति लगाव। इसमें सब कुछ शामिल है, वे लोग भी जिन्हें वह सब नहीं मिला जो हमें मिला है। उनमें गरीब हैं, दुखी हैं, बीमार हैं, बाधित हैं। शिक्षा का मतलब तो यह होना चाहिए कि हम उनके साथ अपनी खुशियां बांटें।

इसका अभिप्राय यह नहीं कि हमारे चारों ओर जो घट रहा है उसकी ओर हम आंखें बंद किये रहें या उसे भुलाये बैठे रहें। जब बहुत कुछ घट जाता है, तभी हम पिघलते हैं और तभी मैदान में उतरते हैं। यानी जब तक ऐसा कुछ नहीं घटेगा, हम इंतज़ार करते रहेंगे या सोये पड़े रहेंगे।

चारों तरफ हमारे लोग तरह-तरह की परेशानियां उठाते हैं, और हम यही सोचकर चुप्पी साधे रहते हैं कि ऐसा तो होता ही रहता है। हम कई बार सब कुछ देखते हुए भी मुंह फेर लेते हैं। शिक्षा को अपनी भूमिका यहीं निभानी होती है। यह काम केवल पाठ्य पुस्तकें और निर्धारित पाठ्यक्रम पढ़ लेने से ही पूरा नहीं होता। छोटी उम्र से ही शिक्षा का मतलब हमारे लिए अपने समाज के प्रति अपने लगाव को बढ़ाना है और समाज के विभिन्न दुःखों को दूर करना है।

समाज के ये बहुत से दुःख यों ही मिट जायेंगे, अगर हम जो कुछ हमारे पास है, उसे आपस में बांट लें। पूरा नहीं बांट सकते तो थोड़ा ही सही। इससे हमें खुशी मिलनी चाहिए। शिक्षा से हमें जो ज्ञान मिलता है उसे अगर हम बांट लें, तो हम कुछ नहीं खोयेंगे। ज्ञान तो जितना बांटा जाये, बढ़ता ही बढ़ता है।

आओ, शुरूआत तो करें।

वर्ष : ४४ | अप्रैल १९९२ | अंक : ८
एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

एक और राष्ट्रमंडल
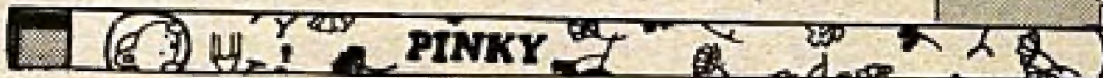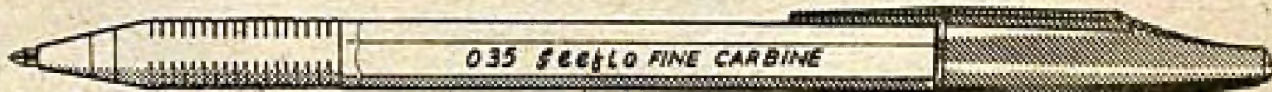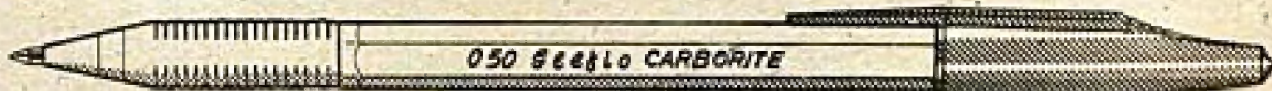
दिसंबर के पहले तीन हफ्तों में तुम समाचार-पत्रों की यह मोटी-मोटी सुर्खियां देख रहे थे-सोवियत संघ टुकड़े-टुकड़े, सोवियत संघ दफन, साम्यवाद का अंत, सोवितय संघ अब इतिहास, इत्यादि। एक समय जिसे सोवियत संघ कहा जाता था, वहां तेज़ी से घटी कुछ अविस्मरणीय अभूतपूर्व क्रांतिकारी घटनाओं का यह एक प्रकार से निचोड़ है।

अब सोवियत संघ की जगह "स्वतंत्र राष्ट्रों का राष्ट्रमंडल", या संक्षेप में "सी.आइ.एस." ने जन्म ले लिया है।

"राष्ट्रमंडल" नाम से तो अब हर कोई परिचित है। यह एक राजनीतिक अवधारणा है जिसका अर्थ है ऐसे देशों का समूह जो कभी उस शक्तिशाली, विशाल ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेश के रूप में थे जिस के बारे में कहा जाता था कि वहां सूरज कभी नहीं डूबता।

भारत एक राष्ट्रमंडलीय देश है, इसी प्रकार पाकिस्तान भी राष्ट्रमंडल में आता है। इनके अलावा श्रीलंका, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, कैनेडा और कुछ चालीस से ऊपर अन्य स्वतंत्र राष्ट्र भी इस में हैं।

नये राष्ट्रमंडल में बारह गणराज्य हैं। ये अब तक सोवियत संघ के अंग थे। "समाजवादी गणराज्य" सोवियत संघ

(यू.एस.एस.आर.) १९१७ की अक्तूबर क्रांति द्वारा जिस नाम से उसे अब पुकार जाता है, अस्तित्व में आया। तब जनता ने लेनिन और ट्रोट्स्की के नेतृत्व में ज़ारवादी शासन का तख्ता पलट दिया, और इसके साथ ही साम्यवाद में विश्वास करने वाले साधारण श्रमिकों का नया शासन वहां शुरू हुआ। इसके अंतर्गत सोवियत संघ में सत्ता कामगार वर्ग के हाथ में आ गयी।

लेकिन पिछले वर्ष के शुरू में सोवियत गणराज्यों में कुछ सुगबुगाहट शुरू हो गयी थी। और एस्टोनिया, लैटविया तथा लिथुआनिया नाम के तीन बाल्टिक गणराज्यों ने सोवियत संघ से हटने का निश्चय कर लिया था। सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचोव ने तब एक नयी संघीय संधि तैयार की थी और यह उम्मीद की थी कि बाकी के बारह गणराज्य इसे स्वीकार कर लेंगे। लेकिन उनकी उम्मीदों पर तब पानी फिर गया जब बहुत से गणराज्यों ने स्वाधीनता के लिए शोर मचाया और उन्होंने जो बैठक बुलायी थी, उसमें शामिल होने से या तो इंकार कर दिया, या संधि पर हस्ताक्षर ही नहीं किये।

श्री गोर्बाचोव अपने इस्तीफे की घोषणा करने वाले पहले और आखिरी निर्वाचित राष्ट्रपति हैं। उन्होंने शासन की बागडोर रूस के राष्ट्रपति बोरिस येल्स्तिन के हाथों में सौंप दी। सोवियत संघ के सभी गणराज्यों में रूस ही सब से बड़ा और काफी बड़ा शक्तिशाली गणराज्य था।

दरअसल, श्री येल्स्तिन ने ७ दिसंबर तक कह दिया था कि वह गणराज्यों का एक "समुदाय" बनाने के हक में हैं। इसके विपरीत श्री गोर्बाचोव ने अपनी संशोधित संघ संधि में परिसंघ की बात की थी।

आखिर, अंत में "राष्ट्रमंडल" की संज्ञा पर ही निर्णय टिका। इस में हर गणराज्य का स्वाधीन दर्जा है।

ऐसी बात नहीं कि नये राष्ट्रमंडल में सब कुछ सुगम रूप से चल रहा है। कई समस्याएं यहां भी हैं जिन्हें अभी हल करना है और कुछ तय भी करना है। ये समस्याएं हैं सांझी मुद्रा और अर्थव्यवस्था की, एकीकृत सुरक्षा व्यवस्था और समझौते की और सोवियत संघ द्वारा तैयार किये गये परमाणु अस्त्रों की, जिन्हें बाद में कम करने का निर्णय हुआ। ये तो कुछ ही समस्याएं हैं, ऐसी और भी अनेक हैं।

बीसवीं शताब्दी के इतिहास में १९१७ की रूसी क्रांति एक प्रमुख मील का पत्थर है। संसार तो अब सांस रोके हाल की "रूसी क्रांति" के परिणामों पर आंख रखे हुए है।
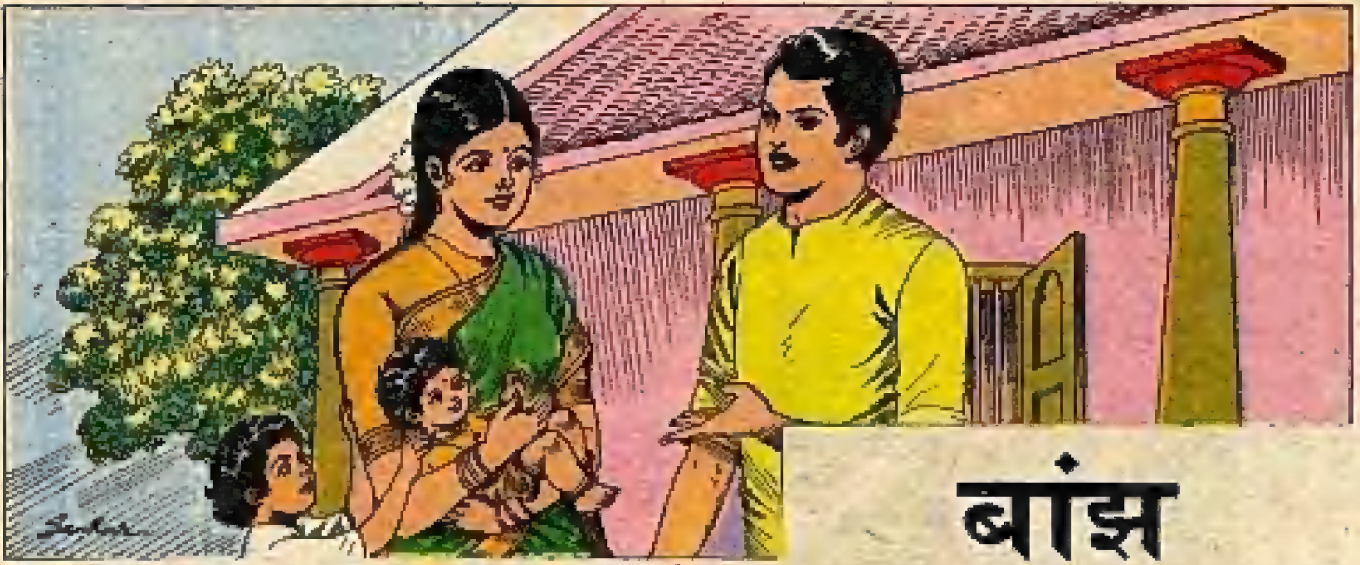
बांझ

रामपुर गांव में रामदेव और जानकी नाम के पति-पत्नी रहते थे । उनके एक बेटा ही था, जिसका नाम माधव था । उधर जानकी की बहन ने एक बच्ची को जन्म दिया और चल बसी । जानकी उस बच्ची को ले आयी और उसे अपनी संतान मानकर पालन-पोषण करने लगी ।

बच्ची का नाम मल्लिका रखा गया । मल्लिका अब बड़ी हो रही थी । एक बिना-मां के बच्ची थी, इसलिए रामदेव और जानकी उसे भरपूर प्यार देते । इस से मल्लिका हठी और घमंडी होती गयी । रामदेव को यह बात बिलकुल पसंद नहीं थी, वह जानकी पर बरसने लगता । उसका गिला यह था कि जानकी ने उसे खुला छोड़ रखा है, उस पर किसी प्रकार का कोई अनुशासन नहीं ।

जानकी कहती, "आप इस तरह इसलिए बोलते हैं क्योंकि वह आपकी अपनी बेटी नहीं है । मैंने उसे यहां लाकर भूल की ।"

इसी प्रकार समय बीतता गया । मल्लिका अब सयानी हो गयी थी । इसलिए उसके लिए अब वर भी चाहिए था । पर उसका घमंडीपन ज्यों का त्यों बना हुआ था । दूसरे, जानकी और मल्लिका, दोनों एक तरफ थीं । वे, जो भी रिश्ता आता, उसे नामंजूर कर देतीं । इसलिए कहीं बात पक्की ही नहीं हो रही थी ।

आखिर, चार मुहल्ले परे, गिरिधारी नाम के एक युवक से उसका रिश्ता तय हुआ । न जाने उस वक्त मल्लिका किस मनः स्थिति में थी कि उसने मंगनी के अवसर पर बड़ी शालीनता दिखायी और उससे जो प्रश्न पूछे गये, उनका मृदुता से उत्तर दिया ।

जैसे ही यह रिश्ता पक्का हुआ, जानकी रामदेव से बोली, "देख लिया न । हमेशा

ललिता गायत्री
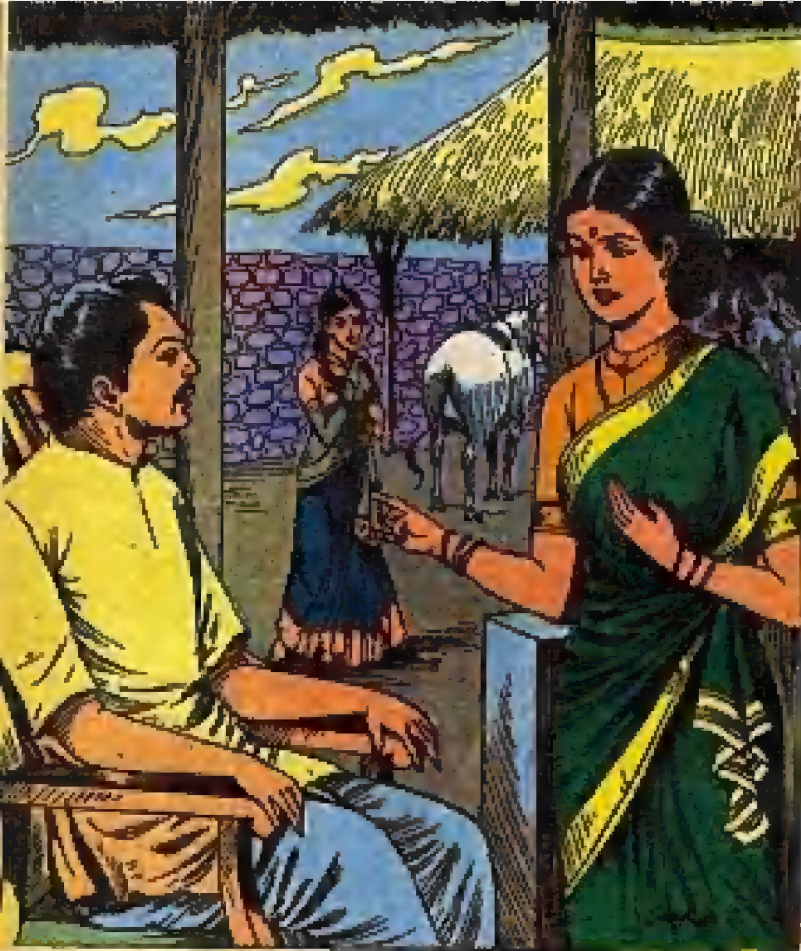
उसे हठी और घमंडी कहते थे । कितनी सुशील है हमारी बेटी । किस ढंग से उसने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये । अब उसके बारे में कभी कुछ उलटा-सीधा न कहना ।"

पत्नी की बात सुनकर रामदेव मुस्करा दिया, बोला कुछ नहीं ।

कुछ दिन ऐसे ही बीत गये । एक दिन रामदेव ने जानकी से कहा, "मल्लिका की शादी तो पक्की हो गयी । मैं सोचता हूं लगे हाथों माधव की शादी भी कर दें । क्या ख्याल है तुम्हारा?"

"माधव की शादी के लिए ऐसी जल्दबाज़ी क्यों?" जानकी ने तुनक-मिजाज़ी दिखाते हुए कहा ।

"जल्दबाज़ी की बात नहीं ।" रामदेव ने उत्तर दिया । "दरअसल, नारायण अपनी बेटी, कमला, के लिए मुझ पर बहुत दबाव डाल रहा है । कमला भी अब सयानी हो गयी है न ।"

नारायण और रामदेव गहरे मित्र थे । जानकी नारायण के परिवार को अच्छी तरह जानती थी । नारायण का बेटा, वेणु और माधव भी आपस में अच्छे मित्र थे ।

"पर कमला का रिश्ता तो कहीं और तय हुआ था ।" जानकी तुनक-मिजाज़ी से बोली, "उसका क्या हुआ?"

"वह रिश्ता टूट चुका है, यह तुम स्वयं भी जानती हो ।" रामदेव ने चिढ़कर कहा ।

"मैं जानती हूं, वह रिश्ता क्यों टूटा है । वह टूटा है कमला की तेज़ ज़बान के कारण । कैसे कैंची की तरह चलती है ।" कमला ने ताना देते हुए कहा ।

जब रामदेव और जानकी में नोक-झोंक हो रही थी, तब माधव भी वहीं था । अपनी मां की बात सुनकर उसे अचंभा हुआ । उससे रहा नहीं गया । "मां, यह तुम कह रही हो!" वह गुस्से से बोला, "तुम उसे बचपन से जानती हो । उसके लिए ऐसी भावना रखती हो ।"

जानकी को बेटे का बीच में कूद पड़ना अच्छा नहीं लगा । उसने उसकी तरफ तेज़ निगाहों से देखा । पर माधव इससे विचलित नहीं हुआ । उसी तरह शांत रहते हुए उसने फिर कहा, "मां, शायद तुम को असलियत का पता नहीं । ठीक है, कमला का रिश्ता

उनके किसी निकट संबंधी के यहां हुआ था। पर लालची लोगों का मुंह तो हमेशा खुला रहता है न। उनकी देहज की मांग ज़रूरत से कुछ ज़्यादा-ही थी। अब उसके मां-बाप करते भी तो क्या करते। आखिर, यह रिश्ता टूट गया। अब तुम ही बताओ, इसमें कमला का कहां हाथ है?"

"तुम अपनी फिजूल की वकालत बंद करो," जानकी तीखी आवाज़ में बोली, "बड़ों के मामले में जो लड़की दखल देगी, उसकी भला कहां पट सकती है? वह तो एक दिन अपने सास-ससुर को भी घर से बाहर करेगी। और जब तुम बाप-बेटे ने फैसला कर ही लिया है, तब मुझ से पूछने की क्या ज़रूरत है?" और यह कहकर जानकी वहां से हट गयी।

आखिर, मल्लिका की शादी गिरिधारी से हो गयी। और उधर मल्लिका अपने ससुराल गयी, इधर कमला इस घर में बहू बनकर आ गयी। लेकिन जानकी के मन में तो कमला के प्रति पहले से ही कुढ़न थी, इसलिए वह उसे लेकर कोई न कोई बखेड़ा खड़ा कर देती और उसे उलटा-सीधा कहने लगती। बहरहाल, कमला ने अपनी सहनशीलता बनाये रखी, और उसकी सास चाहे कितनी भी कटुता से बोलती, वह हर बात का विनम्रता से उत्तर देती। कभी-कभी तो जानकी स्वयं भी कमला की इस विनम्रता से अचंभे में पड़ जाती।

इसी बीच एक बार माधव और कमला मल्लिका के यहां उससे मिलने गये, लेकिन कुछ ही देर बाद लौट आये। उनके

पीछे-पीछे मल्लिका और गिरिधारी भी थे। कमला के सर पर पट्टी बंधी हुई थी।

यह सब देखकर रामदेव घबरा गया, और उसने उसी घबराहट में प्रश्न किया, "यह क्या हुआ कमला बेटी को? यह सर पर पट्टी कैसी है?"

पर इस प्रश्न का उत्तर कमला या माधव ने नहीं दिया। उत्तर देने वाला रामदेव का दामाद गिरिधारी था। वह बोला, "यह आप अपनी बेटी मल्लिका से पूछिए।" फिर उसने अपनी सास, जानकी, की ओर कड़वाहट से भरकर देखा और कहता गया, "यह आपकी लाड़ली बेटी की करतूत है। दरअसल, यह जब से हमारे यहां आयी है, हम इसकी हर गुस्ताखी और बदज़बानी को बर्दाश्त करते रहे। हमने सोचा, शांत रहने में ही भलाई है। पर आज तो इसने हद कर दी। एक मामूली-सी बात पर इसने मेरी मां पर एक बर्तन उठाकर फेंका। उस बर्तन से चोट तो उन्हें ही आती, पर कमला झट से बीच में आ गयी, जिससे वार इसी पर पड़ा और इसके सर से खून की धार फूट पड़ी।"

दामाद की बात सुनकर जानकी स्तब्ध रह गयी। उसने परेशानी में मल्लिका की ओर देखा। मल्लिका उस वक्त बुरी तरह सहमी हुई थी। फिर वह अपनी मां के गले से लगकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। लेकिन पहले की तरह जानकी अब उसे सांत्वना नहीं दे पायी।

थोड़ी देर तक इंतज़ार करते रहने के बाद गिरिधारी ने मल्लिका से कहा, "चलो, अब चलें यहां से।" और वह उसे लेकर अपने घर लौट गया।

दामाद की बात सुनकर जानकी के मन में खलबली मच चुकी थी। पहले इधर-उधर घूमती रही, फिर पति के साथ मंदिर में हरिकथा सुनने चली गयी।

हरिकथा सुनाने वाला पंडित वनवास पर निकले राम और सीता के लिए कौसल्या के मन के दुःख का वर्णन कर रहा था।

"स्वभाव से स्त्री करुणामयी है, पर हमारे देखने में स्त्री के दो रूप आते हैं। मां के रूप में वह सहनशील और स्नेहमयी है, सास के रूप में उसका व्यवहार ठीक इसके विपरीत

हो जाता है । अपनी बेटी की कमियों पर हमेशा परदा डालकर वह उसे स्निग्ध स्नेह देती है, पर अपनी बहू की—चाहे वह कितनी भी अच्छी हो-ढूंढ़-ढूंढ़कर कमियां निकालेगी और उसके मन को सालती रहेगी । वास्तव में, असली मां वही है जो अपनी बेटी और बहू, दोनों को, समान रूप से देखती है । अगर वह ऐसा नहीं करती, यानी, बेटी को वह एक कसौटी पर कसती है और बहू को दूसरी कसौटी पर, तो चाहे उसने बच्चों को जन्म दिया हो, वह मां नहीं, बांझ है, बांझ ।"

पंडित के अंतिम शब्दों का जानकी पर गहरा असर पड़ा । वह उन पर देर तक सोचती रही ।

हरिकथा समाप्त होने पर दोनों पति-पत्नी घर लौटे । रास्ते में रामदेव चुटकी लेने से रह न सका । बोला, "पंडित जी के लिहाज़ से तो तुम मां नहीं, बांझ हो ।"

पति की चिकोटी से पत्नी की आंखों में आंसू आ गये । वे अविरल बहने लगे । फिर वह आंखें पोंछती हुई बोली, "आज तक मैं बांझ रही, मैं मानती हूं । लेकिन अब मेरी आंखों पर से परदा हट गया है । ममता ने मुझे एकतरफा बना दिया था । कमला जैसी बहू को पाकर मुझे अपने को सौभाग्यशाली मानना चाहिए था । मल्लिका को बिना-मां के बच्ची समझ कर मैंने उसे बहुत लाड़ दिया जिससे वह बिगड़ गयी । वास्तव में, हर लड़की जब वह बहू बनकर ससुराल में आती है, बिना-मां के बच्ची समान ही होती है । जिस दिन से मैं कमला और मल्लिका को एक नज़र से देख सकूंगी, उसी दिन से मैं असली मां कहलाने की हकदार बनूंगी ।"

पत्नी के मुंह से ऐसी बात सुनकर रामदेव बहुत खुश हुआ । उससे मज़ाक करता हुआ- सा बोला, "हां, हां, असली मां ज़रूर बनो, लेकिन मल्लिका की तरह कमला को भी न बिगाड़ देना ।" और वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा ।

जानकी भी अब अपनी हंसी रोक न सकी ।

चिकित्सा में जल्दबाज़ी

वैद्य रुद्राचारी के यहां शरभाचारी नाम का एक युवक चिकित्सा विद्या सीखने आया हुआ था। रुद्राचारी उसे तरह-तरह के रोगों और उनके निदान के बारे में बताया करता, और शरभाचारी वह सब पुस्तक रूप में लिखता जाता।

एक बार रुद्राचारी ने उससे कहा, "यह मत समझो कि हर रोग के लिए दवा होती है। कुछ रोग ऐसे हैं जिनके लिए कोई दवा नहीं, जैसे–हिचकी। ऐसे रोग को दूर करने के लिए गाल पर एक थप्पड़ जड़ देना चाहिए। बस।"

रुद्राचारी और शरभाचारी के बीच हिचकी के बारे में बात चल ही रही थी कि बग्घी से उतरकर वहां एक मोटा-ताज़ा व्यक्ति आया और वह घबड़ाहट के साथ बोला, "कल रात से हिचकियों ने परेशान कर रखा है.... ।"

अभी उसने अपनी बात पूरी भी न की थी कि शरभाचारी ने उसके गाल पर ज़ोर से एक थप्पड़ जड़ दिया। वह व्यक्ति हैरान रह गया। इस पर शरभाचारी बोला, "बस, अपनी हिचकी गायब हुई ही समझो।" और यह कहकर वह बड़ा खुश-खुश दिखने लगा। वह मोटा व्यक्ति अपना गाल सहलाने लगा और बोला, "हिचकियां मुझे नहीं, बग्घी में बैठे मेरे साथी को आ रही हैं।"

अब रुद्राचारी के लिए शरभाचारी की ओर आंखें तरेरकर देखना स्वाभाविक था। उधर शरभाचारी को पता चल गया था कि चिकित्सा में जल्दबाज़ी ठीक नहीं होती। — लक्ष्मीविद्या

अपूर्व के पराक्रम

१३

(अपूर्व का आविर्भाव यज्ञाग्नि से हुआ है । कद में चाहे वह पहले जैसा, यानी नन्हा-सा ही है, लेकिन अब वह जवान हो गया है । उसे एक ज़बरदस्त साज़िश का पता चला है । राजा का मुख्यमंत्री और एक तांत्रिक एक डायन की मदद से राजकुमारी का अपहरण करने की कोशिश कर रहे हैं—आगे पढ़ें ।)

राजकुमारी का जन्मदिन तेज़ी से निकट आता जा रहा था । अपूर्व ने फैसला कर लिया था कि वह राजा को मुख्यमंत्री और तांत्रिक की साज़िश के बारे में बता देगा, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि वह यह काम कैसे करे । अपने असाधारण कद-काठ की वजह से उसके लिए राजा के सामने स्वयं उपस्थित होना असंभव था । इसलिए वह समीर से मिलने के लिए निकल पड़ा । कहना न होगा कि समीर उसे अपने सामने पाकर बहुत खुश हुआ और राजधानी चलने के लिए तैयार हो गया ।

"मेरी बात अच्छी तरह से समझ लो," अपूर्व ने पहले उसे षड्यंत्र के बारे में सब कुछ बता दिया और फ़िर बोला, "राजा से तुम्हें अकेले में भेंट करनी होगी और उसे सब कुछ बता देना होगा ।"

* * *

वह भी अंधेरी रात ही थी जब तांत्रिक ने एकाएक मुख्यमंत्री का

दरवाजा खटखटाया ।

"तांत्रिक को अपने सामने पाकर मुख्यमंत्री को अचंभा हुआ । उसने पूछा, "ऐसे वक्त यहां किस कारण आये हो? अभी परसों ही तो हमने राजकुमारी के अपहरण संबंधी पूरी योजना तैयार की थी, और छोटी से छोटी बात पर ग़ौर किया था ।"

"मंत्री, क्या मैं तुमसे पहले कभी ऐसे वक्त मिला हूं?" तांत्रिक ने ठिठोली के अंदाज़ में कहा ।

"नहीं, मेरे कहने का मतलब यह नहीं था । अगर तुम इस वक्त यहां आये हो तो इसके पीछे ज़रूर कोई ज़बरदस्त कारण रहा होगा ।" मंत्री ने कहा ।

"तुम ठीक कहते हो । मेरी गुरु, वह डायन, कहती है कि हमारी योजना का किसी तरह भेद खुल चुका है । कोई न कोई हम पर आंख रखे हुए है ।"

"लेकिन यह तो असंभव है ।" मंत्री बोला ।

"असंभव कुछ भी नहीं । ऐसा विचार उसके मन में कभी नहीं आता, अगर इसके पीछे कोई सच्चाई न होती," तांत्रिक ने कहा । फिर उसने प्रश्न किया, "क्या कहीं तुमने इस योजना के बारे में अपनी पत्नी या किसी निकट के व्यक्ति को गलती से कोई इशारा तो नहीं किया ।"

"नहीं, बिलकुल नहीं ।" मुख्यमंत्री ने अपनी बात पर बल देते हुए कहा । "मुझे तुम पर यकीन है, लेकिन हमें और भी सावधानी और चौकसी बरतनी होगी महल के चारों ओर अपने विश्वसनीय आदमियों को तैनात करो । वहां दिन-रात पहरा होना चाहिए । राजा से कोई भी व्यक्ति मिलने न पाये । लेकिन तुम्हारे अपने आदमियों को भी इस चौकसी का कारण पता नहीं चलना चाहिए ।" तांत्रिक ने निर्देश दिये ।

"ऐसा ही होगा," मुख्यमंत्री ने कहा । "महल के कई अहलकार और कर्मचारी मेरे वफादार हैं ।"

अपर्व को इन दो षड्यंत्रकारियों के बीच हुई इस भेंट की जानकारी नहीं थी, लेकिन जब समीर को राजा से मिलने नहीं दिया गया तो वह समझ गया कि स्थिति वैसी नहीं है जैसी कि वह समझ रहा था, बल्कि

और भी गंभीर है ।

राजकुमारी के जन्मदिन में बस एक ही दिन रह गया था । अपूर्व को पता चला था कि सूर्यास्त के समय राजा महल के छज्जे पर सैर का आनंद लेता है । उसने समूचे षड्यंत्र की रूपरेखा एक कागज़ पर लिखी और उसमें राजा को सलाह दी कि वह पुजारी की सुरक्षा के लिए अंगरक्षक नियुक्त करें, और राजकुमारी को देवी के सिंहासन और दीवार के बीच के तंग रास्ते पर जाने से रोके । फिर उसने अपनी जिस अलौकिक शक्ति से पक्षियों और पशुओं को बुलाया उस से एक चील को बुलाकर यह काम सौंपा कि वह उसका पत्र महल के छज्जे पर उस समय ले जाये जब सूर्य डूब रहा हो ।

चील ने उसके आदेश का पालन किया, लेकिन जब वह अपनी चोंच में पत्र लिये महल के ऊपर से उड़ रही थी, महल के एक रक्षक को शक हुआ और उसने उस पर तीर छोड़ दिया । तीर पक्षी को लगा तो नहीं, लेकिन इससे वह बहुत डर गया । इसलिए वह जल्दी से वहां से उड़ा जिसके कारण वह पत्र उसकी चोंच से गिरकर महल के इर्द-गिर्द खाई में जा गिरा ।

अपूर्व को इस घटना के बारे में कुछ पता नहीं चल सका । उसे विश्वास था कि पत्र राजा तक पहुंच चुका होगा और आवश्यक सावधानी बरतनी शुरू कर दी होगी ।

राजकुमारी के जन्मदिन पर सुबह से ही चहल-पहल शुरू हो गयी थी । पड़ोसी राज्यों से आने वाले राज-परिवारों के सदस्य और प्रतिनिधियों ने राजकुमारी को बड़े उत्साह से बधाई दी । राजकुमारी चारों तरफ अपनी मुस्कान और मीठे शब्द बिखेर रही थी । इससे वह और भी सुंदर दिख रही थी और उसने हर किसी का दिल जीत लिया था ।

समीर लोगों में घुल-मिल गया और हर घटना को गौर से देखता रहा । बीच-बीच में वह एक उजड़े घर में खिसक लेता । वह घर महल से ज़्यादा दूर नहीं था । अपूर्व वहीं इंतज़ार कर रहा था और महल की घटनाओं से अपने आप को अवगत रखे हुए था । उसे और समीर को हैरानी हो रही थी कि न तो राजा के चेहरे पर किसी प्रकार का तनाव था, और न ही राजमुकारी के

राजकुमारी अपनी दासियों के साथ मंदिर में दाखिल हुई । इधर वह देवता के सामने हाथ जोड़े खड़ी थी और उधर पुजारी श्लोक पर श्लोक पढ़े जा रहा था । कहना नहीं होगा कि असली पुजारी का अपहरण कर लिया गया था । पुजारी के वेश में यह तो तांत्रिक था ।

"आइए राजकुमारी, देवता की तीन बार परिक्रमा कीजिए । आइए, मेरे पीछे-पीछे चली आइए तांत्रिक ने कहा ।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया ।

"राजकुमारी के साथ और किसी के आने की आवश्यकता नहीं । मैं एक विशेष प्रकार का अनुष्ठान कर रहा हूं । यह बहुत ही पवित्र है," पुजारी ने घोषणा की ।

पुजारी के दो सहायकों ने अपनी आवाज़ बहुत ऊंची करके कुछ श्लोक बोले । उस समय राजकुमारी अपनी दासियों की दृष्टि से ओझल होकर उस अंधेरे रास्ते से जा रही थी । फिर वह धीमे से चीखी, जिसे कोई सुन नहीं पाया । उसे उस गुप्त सुरंग में धकेला जा चुका था और तांत्रिक भी उसके पीछे हो लिया था ।

राजा मंदिर के बाहर खड़ा अब तक इंतज़ार ही कर रहा था ।

"राजन्, राजकुमारी का अपहरण हो चुका है," समीर भीड़ को ठेलते हुए किसी तरह राजा तक पहुंचा, और पूरे ज़ोर से चिल्लाया ।

"यह पगला कौन है?" राजा ने पूछा ।

"राजन्, मैं कोई पागल नहीं हूं । आप

चेहरे पर । राजकुमारी की सुरक्षा के लिए उठाये गये किसी खास कदम का भी कोई संकेत नहीं था । अपूर्व को अब शक हो गया कि उसने राज को जो पत्र भेजा था, वह उसे नहीं मिला । अब क्या किया जाये? वह और समीर, दोनों, मंदिर की ओर बढ़े, क्योंकि राजकुमारी को लेकर जन्म-दिवस का जुलूस मंदिर की ओर सरकना शुरू हो गया था ।

राजकुमारी, राजा और राज-परिवार के दूसरे सदस्यों की अगवानी के लिए मंदिर के सामने लगभग एक हजार व्यक्ति इकट्ठे हो गये थे । मंदिर के भीतर बेशुमार दीये जल रहे थे, लेकिन फिर भी वहां रोशनी कम थी ।

मुझे पहचान नहीं रहे । मैं समीर हूं । मैंने और मेरे दोस्तों ने आपके सैनिकों की समुद्री डाकू पकड़ने में मदद की थी । राजकुमारी का वाकई अपहरण हो चुका है ।"

"लेकिन वह तो मंदिर के भीतर है!" राजा ने कहा ।

"नहीं है । आप उसे आवाज़ दीजिए और खुद देख लीजिए ।" समीर ने उत्तर दिया ।

"क्या यह ठीक कहता है?" राजा ने एक दासी की ओर देखा और आदेश दिया कि वह राजकुमारी को बुलाकर लाये । पर अगले ही क्षण उसने और अन्य दासियों ने बड़े चिंतातुर स्वर में राजा को खबर दी कि राजकुमारी का कोई पता नहीं चल रहा ।

नकली पुजारी के वे दोनों सहायक वहां से खिसकने की कोशिश कर रहे थे ।

"राजन्, इन दोनों व्यक्तियों को फौरन कब्ज़े में ले लिया जाये । आप कृपया मेरे साथ उस गुप्त सुरंग के दूसरे सिरे पर चलें जो मंदिर के भीतर से शुरू होती है । एक दुष्ट तांत्रिक ने राजकुमारी को उसी सुरंग में धकेल दिया है," समीर ने कहा ।

राजा के अंगरक्षकों ने तांत्रिक के सहायकों को फौरन दबोच लिया । राजा, उसका सेनापति और कोई एक दर्जन अंगरक्षक घोड़ों पर सवार जंगल की ओर बढ़ चले । समीर सेनापति के साथ उसके घोड़े पर ही बैठ गया । अपूर्व उनके पीछे-पीछे बिजली की गति से दौड़ रहा था । उसे कोई देख नहीं सकता था ।

सुरंग जहां खत्म होती थी, वहां पहुंचने में उन्हें कुछ मिनटों से ज़्यादा समय नहीं लगा ।

"हुजूर, इस डायन को काबू में कीजिए । यह राजकुमारी की जीवन-शक्ति चूस जाने के लिए आतुर है ।" समीर ने कहा ।

"हा! हा! तुम्हारी यहां तक पहुंचने की जुर्रत कैसे हुई? मैं तुम्हें जलाकर राख कर दूंगी ।" डायन ने डरावनी आवाज़ में कहा । वह बरगद के पेड़ की सूखी शाखा पर बैठी थी, और वह शाखा ज़मीन को छू रही थी ।

"वहीं बैठी रहो! ज़रा भी हिली तो तुम स्वयं ही राख हो जाओगी ।"

यह एक अजीब आवाज थी । राजा और

समीर ने पीछे मुड़कर देखा । वहां एक मुनि अपने दमकते रूप में विराजमान था ।

"आप कौन हैं श्रीमान?" राजा ने पूछा ।

इससे पहले कि मुनि कोई उत्तर देता, समीर ने उसे दंडवत, प्रणाम किया और कहा, "मैं आपको जानता हूं । आप अपूर्व के जनक हैं न! उसने मुझे बताया था कि जब स्थिति बहुत ही गंभीर हो जाये तो वह आप पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा, और आप हमारी सहायता करने के लिए प्रकट हो जायेंगे ।"

मुनि मुस्करा दिया, फिर बोला, "तुम ठीक कहते हो । मैं गहरी समाधि में था, जब अपूर्व की पुकार मुझ तक पहुंची । यह कोई मामूली डायन नहीं है । इसके पास बहुत बड़ी शक्ति है । तुम जानते ही हो शक्ति का इस्तेमाल गलत काम या सही काम, किसी के लिए भी हो सकता है! अलौकिक शक्ति पर भी वही नियम लागू होता है । इस डायन ने अपनी शक्ति का इस्तेमाल हमेशा अपनी ऊल-जलूल भड़कन मिटानेके लिए किया है । यह कई शताब्दियों से अपने शिकारों की जवानी और ताकत चूसती आयी है, और इसी पर ज़िंदा है । राजकुमारी के साथ भी यह यही करना चाहती थी, लेकिन अपनी शक्ति से मैंने इसकी शक्ति नष्ट कर दी है ।"

डायन बड़ी तीखी और डरावनी आवाज़ में हंसी, "साधु, तू मेरी सारी शक्ति खत्म नहीं कर पाये हो । अभी कुछ और भी बची है । देखो, इसे मैं अपने पर इस्तेमाल करने जा रही हूं ।" और अगले ही क्षण देखा गया कि डायन धू-धू करके जलने लगी है । बड़ी-बड़ी लपटें उठीं, और वहां कुछ नहीं बचा, सिवाय मुट्ठी-भर काली राख के । यह सब दो-एक क्षणों में ही हो गया ।

"वाकई, कुछ शक्ति उसके पास बची थी, अपने को खत्म करने के लिए ।" मुनि ने अपने ढंग से टिप्पणी की ।

अब तक राजा भी मुनि के सामने दंडवत लेट गया था ।

"ए पवित्र आत्मा, मेरी बेटी कहां है?" उसने मुनि से प्रश्न किया ।

"और अपूर्व कहां है?" समीर ने जानना चाहा ।

"जब डायन ने जान लिया कि उसका

खेल खत्म हो चुका है तो उसने तांत्रिक को एक संकेत भेजा । तांत्रिक अभी राजकुमारी के साथ सुरंग में ही है । उसकी योजना यह थी कि वह राजकुमारी को अपनी ढाल के रूप में इस्तेमाल करेगा, और चंद्रप्रकाश हीरा हथियाने के लिए अगर आवश्यकता हुई तो उसका वध भी कर देगा । इसीलिए एक छोटे से रास्ते से अपूर्व को सुरंग में दाखिल होना पड़ा ताकि वह तांत्रिक को बंदी बना सके और राजकुमारी को सही-सलामत बाहर ला सके । इस सिरे पर सुरंग को अंदर से ही खोला जा सकता है । अपूर्व इसे खोलेगा और खोलकर बाहर आयेगा ।"

जैसे ही मुनि ने अपनी बात पूरी की, वैसे ही बरगद के पेड़ के पीछे वाली कंदरा के भीतर से कोई आवाज़ आयी । देवता के समान एक सुंदर युवक तांत्रिक को अपने पीछे घसीटता हुआ चला आ रहा था, और तांत्रिक का रंग पीला पड़ चुका था ।

उनके पीछे-पीछे राजकुमारी थी । वह मुस्करा रही थी, हालांकि कुछ-कुछ वह अचंभित भी हो रही थी । अब राजकुमारी तो राजा की भुजाओं में जा गिरी और वह युवक मुनि की ओर बढ़ा । मुनि के पांव छूते-छूते वह लगभग गिरने को ही था कि मुनि ने उसे संभाल लिया और अपने गले से लगा लिया ।

"मेरे बेटे । अब वक्त आ गया था कि तुम अपना नन्हा रूप त्याग कर पूरे मानवीय रूप में प्रकट होते । इसी से तुम तांत्रिक का मुकाबला कर सकते थे । अब से तुम हमेशा इसी रूप में रहोगे ।" मुनि के ये वचन थे ।

"पिताजी, इस युवक ने मुझे उस दुष्ट के चंगुल से बचाया," राजकुमारी ने पहले अपूर्व की ओर, और फिर तांत्रिक की ओर इशारा करते हुए कहा ।

"मैं उसका कितना कृतज्ञ हूं!" राजा ने अपूर्व की ओर देखते हुए कहा ।

"अब समय आ गया है कि मैं आप सब से विदा लूं," मुनि ने कहा ।

"मैं भी आपके साथ ही चलूंगा," अपूर्व ने कहा ।

मुनि मुस्करा दिया । "क्या इसलिए मैंने तुम्हें मानवीय आकार दिया है कि तुम फिर मेरे साथ चलो? आज तक तुम छिप-छिपकर दूसरों का भला करते आये थे । अब तुम खुल्लम-खुल्ला, सामान्य ढंग से, करोगे । बहादुरी से, बुद्धिमत्ता से, दूसरों से आगे रहकर ।"

"लेकिन.. ।" अपूर्व सकुचा रहा था ।

"क्या तुम यह सोच रहे हो कि तुम यह सब कैसे करोगे? मेरा राज्य तुम्हारे इशारे पर है, और यदि मुनि आज्ञा दें तो मैं चाहूंगा कि मेरे बाद तुम ही यहां का सिंहासन संभालो । और यदि मेरी बेटी और तुम, दोनों रज़ामंद हों, तो तुम उसके मामा का राज-पाट भी संभालो, क्योंकि उसकी उत्तराधिकारी भी वही है ।" राजा ने कहा ।

राजकुमारी लजा गयी । मुनि ने दोनों को अपने पास बुलाया और उन्हें आशीर्वाद दिया । "तुम दोनों एक आदर्श दंपति बनोगे । तुम सदा सुखी रहोगे । तुम बहुत बड़े-बड़े नेक काम करोगे," उसने कहा और आंख झपकते ही अदृश्य हो गया ।

कुछ देर के लिए तो पहले सब हैरानी में पड़ गये, लेकिन बाद में खुशियां मनायी जाने लगीं । ये खुशियां कई दिनों तक चलती रहीं । अपूर्व और राजकुमारी का विवाह हो गया था, और दुष्ट मुख्यमंत्री और तांत्रिक, दोनों को बंदीगृह में ठूंस दिया गया था ।

राजा अब अपने राजकीय कार्यों से निवृत्त हो चुका था । उसने सारा काम-काज अपूर्व के ज़िम्मे कर दिया । समीर अब अपूर्व का नया मुख्यमंत्री था । (समाप्त)
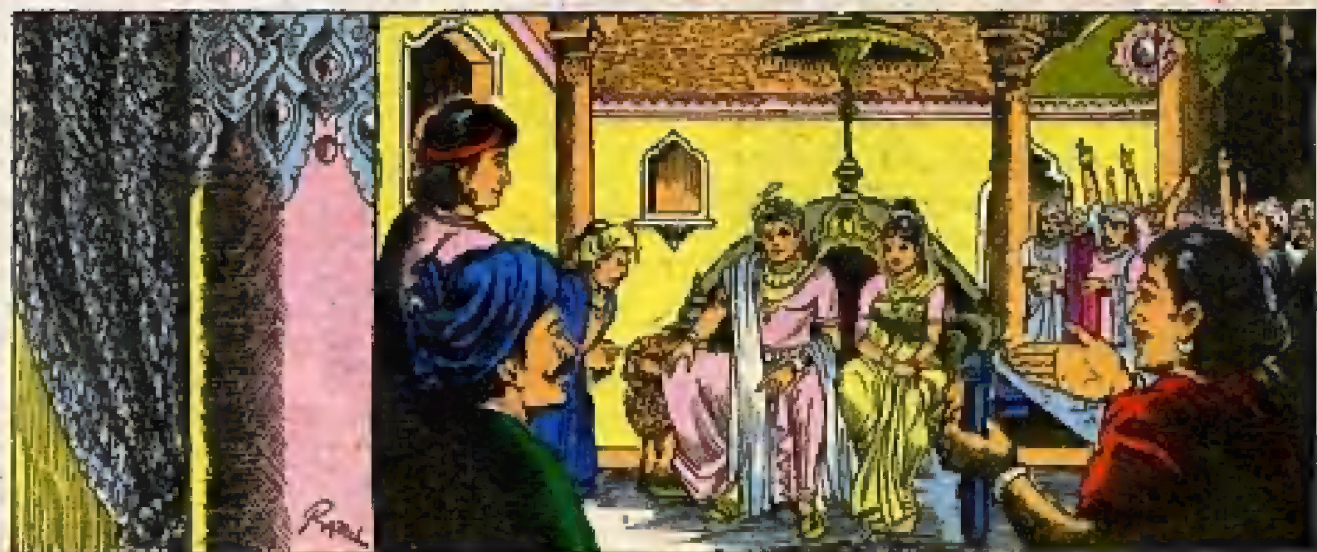
पाप का बोझ

अपनी धुन के पक्के राजा विक्रम पेड़ के पास फिर गये, वहां से लाश उतार कर अपने कंधे पर डाली और पहले की तरह मौन साधे श्मशान की ओर बढ़ने लगे। तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, हालांकि आपकी सभी कोशिशें नाकाम जा रही हैं, फिर भी आप आधी रात के वक्त इस भयानक श्मशान में से इस तरह कष्ट उठा रहे हैं। शायद आप किसी पुण्य की आशा से यह सब कर रहे हैं। लेकिन कभी-कभी हमारे पुण्य कार्य भी पाप में बदल जाते हैं। इसके प्रमाण स्वरूप मैं आपको राजा चंद्रसेन की कहानी सुनाऊंगा जिसने स्वयं को अनकिये अपराध के लिए दंडित किया।" यह कह कर बैताल वह कहानी सुनाने लगा।

पुराने ज़माने में उज्जयिनी नगर पर चंद्रसेन का राज था। कवि-पंडितों के प्रति उसके मन में विशेष आदर था। उसका

बैताल कथाएं

दरबार हर पल उन से भरा रहता ।

एक दिन काशी से श्रीदत्त नाम का पंडित आया और उसने राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की । राजा ने उसे सम्मानपूर्वक सभा में बुलवाया । श्रीदत्त ने अपने गहन पांडित्य से राजा तथा सभा में मौजूद विद्वानों को आनंद-विभोर कर दिया । राजा ने श्रीदत्त को बड़े स्नेह से अपने वक्ष से लगा लिया और अपने गले से बहुमूल्य रत्नमाला उतार कर उसे देकर उसका सम्मान किया ।

श्रीदत्त राजा से विदाई लेकर काशी के लिए रवाना हो गया । रास्ते में एक डाकू ने रत्नहार के लालच में उसकी हत्या कर दी । लेकिन चंद्रसेन के गुप्तचरों ने उसे पकड़ लिया और उसे बंदी बनाकर राजा के सामने पेश किया ।

श्रीदत्त की इस अकाल मृत्यु पर राजा चंद्रसेन को भारी क्षोभ हुआ । वह अपने क्रोध को काबू नहीं कर पाया । उसने उस हत्यारे डाकू को मौत की सज़ा सुना दी ।

पर इसके बावजूद उस दिन से राजा का मन अशांत रहने लगा । उसे ऐसा विश्वास हो गया था कि पंडित श्रीदत्त की मृत्यु का कारण परोक्ष रूप से वह स्वयं ही है ।

राजा चंद्रसेन हमेशा यही सोचकर परेशान होता कि जो उपहार उसने श्रीदत्त को उसका सम्मान करने के लिए दिया था, वही काल-सर्प में बदल कर उसकी जान ले बैठा ।

धीरे-धीरे राजा चंद्रसेन का राज-काज पर से मन उखड़ने लगा । वह उसकी ओर ध्यान ही नहीं देता था । बस, आत्मग्लानि ही उसे घेरे रहती, और इसी से उसने बिस्तर पकड़ लिया । राजवैद्य ने बहुत कोशिश की, पर राजा के मन को हर क्षण कुतरने वाले रोग से वह उसे मुक्ति न दिला सका ।

उन्हीं दिनों राजा के मंदिर में एक संन्यासी आया । उसकी बहुत महिमा थी । महारानी और मंत्री ने उस संन्यासी को राजा की हालत बतायी और उससे प्रार्थना की कि वह उस रोग का कोई निदान खोजें ।

संन्यासी राजा के शयनकक्ष में गया । राजा वहां कंकाल की तरह अपने बिस्तर पर पड़ा था । राजा को इस तरह बिस्तर

पर पड़ा देख संन्यासी को बड़ी दया आयी। वह राजा की बगल में बैठ गया और स्नेह से उसका सर सहलाते हुए उससे बोला, "पुत्र, तुम एक क्षत्रिय हो। इस तरह दुर्बल होना तुम्हें शोभा नहीं देता। रणभूमि में तुमने हजारों की तादाद में शत्रुओं को मौत के घाट उतारा होगा। क्या उनके बारे में कभी तुमने दु:ख किया? नहीं किया न? एक डाकू ने दुराशा से यदि पंडित श्रीदत्त की हत्या कर दी, तो उसकी ज़िम्मेदारी तुम अपने ऊपर कैसे ले रहे हो? यह मेरी समझ में नहीं आ रहा। तुमने उस डाकू को मौत की सजा सुना दी। तुम्हारा कर्त्तव्य यहीं पूरा हो जाता है। अब तुम यह दु:ख अकारण क्यों झेल रहे हो?"

"पता नहीं, ऐसा क्यों हो गया, स्वामी।" राजा ने कहा। "मुझे लगता है मैं शापग्रस्त हूं। हर कोशिश के बावजूद मेरा मन स्वस्थ नहीं हो पा रहा है।"

संन्यासी थोड़ी देर के लिए चुप रहा। फिर बोला, "अगर मैं अपने तप के बल पर श्रीदत्त को ज़िंदा कर दूं, तब क्या तुम्हारे मन को शांति मिल जायेगी? इस पर थोड़ा विचार करो और मुझे बताओ।"

संन्यासी की बात सुनकर राजा चंद्रसेन का चेहरा पल भर के लिए खिल उठा। वहां अद्‌भुत आभा झलकने लगी, लेकिन फिर एकाएक ग़ायब हो गयी। राजा ने करबद्ध हो संन्यासी को प्रणाम किया और प्रश्न किया, "महात्मा, क्या आप उस डाकू को भी ज़िंदा कर सकते हैं? अगर कर सकें तो मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा।"
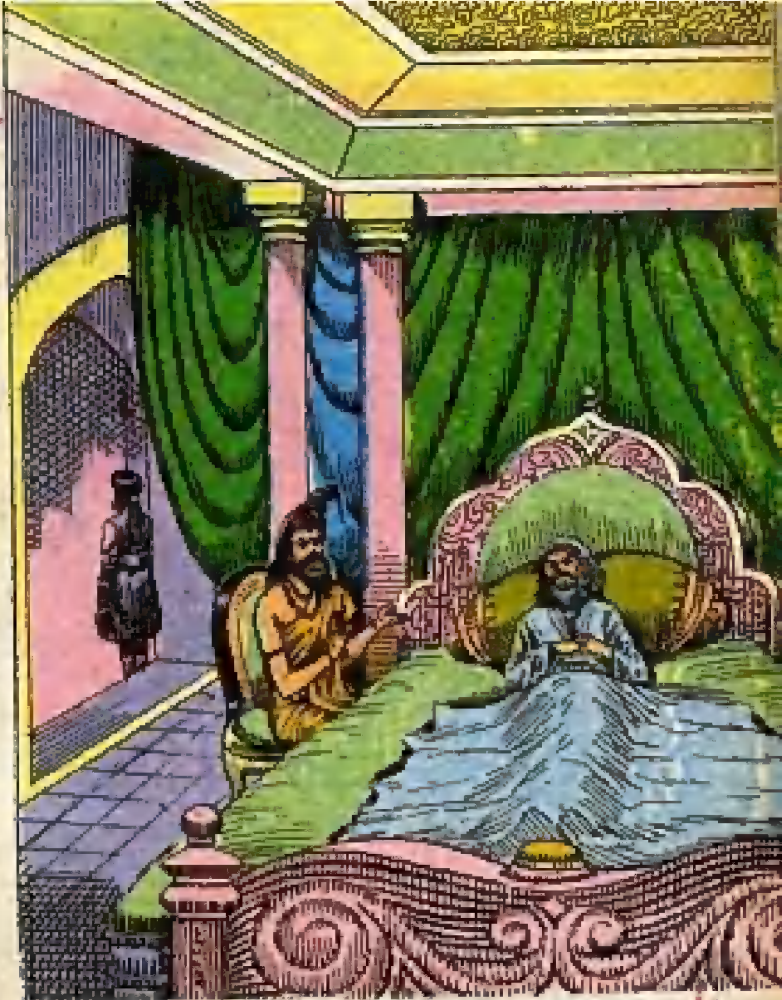
"नहीं वत्स, मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि मैं दोनों को एकसाथ ज़िंदा कर सकूं। अपने तप के बल पर मैं केवल एक ही व्यक्ति को ज़िंदा कर सकता हूं।"

संन्यासी का उत्तर सुनकर राजा ने एक गहरा निश्वास छोड़ा और बोला, "अगर ऐसी बात है तो मैं क्यों जान बूझकर अपने पाप का बोझ बढ़ाऊं? ठीक यही होगा कि आप श्रीदत्त को भी ज़िंदा न करें।"

बैताल कहानी सुना चुका था तो उसने राजा से कहा, "राजन्, क्या आपको राजा चंद्रसेन का व्यवहार अजीब नहीं लगता? जब संन्यासी स्वयं श्रीदत्त को ज़िंदा करने को

तैयार हो गया, तो चंद्रसेन ने उसे रोका क्यों? क्या यह कोरी मूर्खता नहीं है? अपने मन की शांति को फिर से पाने के इस दुर्लभ अवसर को क्यों उसने अपने हाथ से जाने दिया? और फिर, डाकू को भी ज़िंदा करने के लिए संन्यासी से प्रार्थना करना क्या उसके लिए उचित था? राजा ने यह कैसे सोच लिया कि केवल श्रीदत्त को ज़िंदा करने से उसके पाप का बोझ बढ़ जायेगा? क्या यह राजा की मुर्खता नहीं है? क्या यह उसका बावलापन नहीं लगता? आप मेरे इन प्रश्नों के उत्तर दें। यदि आप इनका उत्तर जानते हुए भी नहीं देंगे तो आपका सर फट जायेगा।"

बैताल की बात सुनकर राज विक्रम बोले, "राजा चंद्रसेन को एक मूर्ख या बावला समझना वास्तविकता से मुंह मोड़ना होगा। चंद्रसेन की तार्किक बुद्धि तो ग़ज़ब की थी, साथ ही उसका चिंतन भी। श्रीदत्त को अगर संन्यासी ज़िंदा कर देता तो राजा द्वारा श्रीदत्त को दी गयी मौत की सजा अन्यायपूर्ण हो जाती। इसके साथ ही उसे संन्यासी के तपोबल को खत्म करने का पाप भी अपने सर लेना होता। राजा इन सूक्ष्मताओं को अच्छी तरह समझ रहा था। इसीलिए उसने संन्यासी से प्रार्थना की कि वह डाकू को भी ज़िंदा कर दे। जब संन्यासी ने डाकू को ज़िंदा करने के लिए अपने तपोबल को अपर्याप्त बताया, तो राजा के मन में दो बातें आयीं-एक तो यह कि केवल श्रीदत्त या डाकू को ज़िंदा करना अन्यायपूर्ण होगा, दूसरे संन्यासी के जीवन भर के कमाये हुए तप को इस कृत्य के लिए खत्म करना घोर पाप होगा, जिसे उसे स्वयं ही भुगतना होगा। इसीलिए संन्यासी से राजा ने कहा कि वह केवल श्रीदत्त को ही जिंदा न करें।"

लेकिन बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था, जिससे बैताल लाश के साथ गायब हो गया और पहले की तरह पेड़ की उसी शाखा से जा लटकने लगा। (कल्पित)

(आधार-अभिराम राज की रचना)
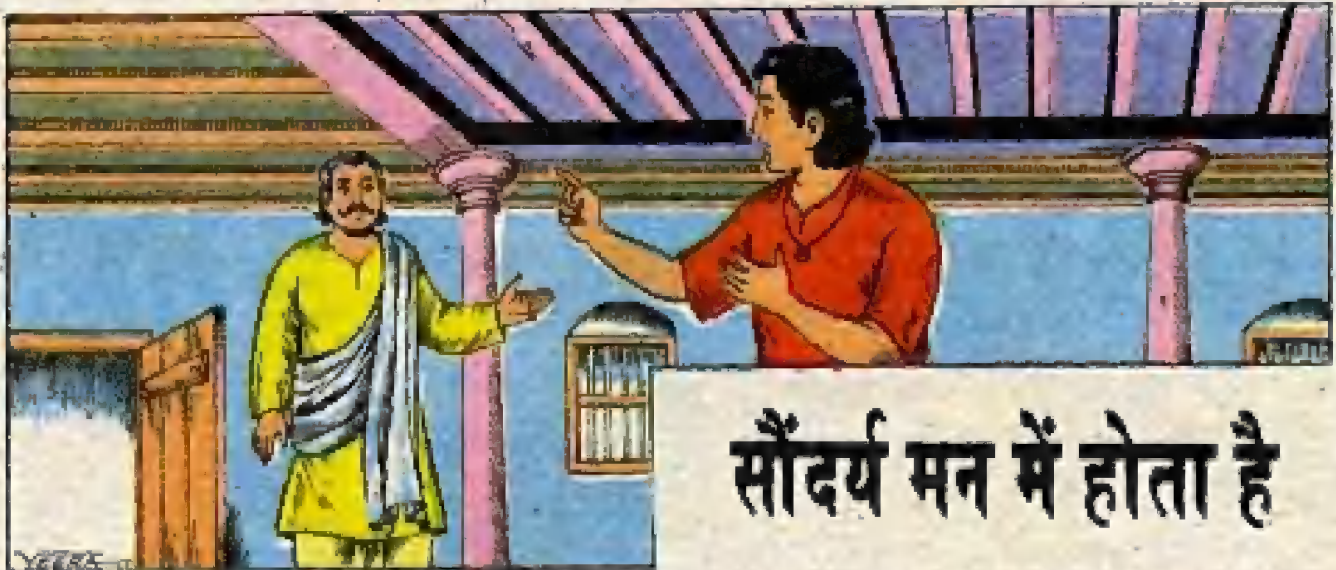
सौंदर्य मन में होता है

धर्मपुर गांव में केशव और राजीव नाम के दो मित्र रहते थे । रोटी-रोज़ी के जुगाड़ में वे दोनों दो अलग-अलग गांवों में बस गये थे । पर इससे उनकी मित्रता में कोई अंतर नहीं आया था । वे अक्सर आपस में मिलते और एक-दूसरे को दुःख-सुख की बातें बताते । इसके अलावा कुछ और खास-खास बातें भी होतीं ।

अब धीरे-धीरे दोनों मित्रों का व्यापार काफी आगे बढ़ने लगा था । दोनों ने लाखों रुपये कमा लिये थे । इधर केशव का बेटा विद्याधर और उधर राजीव की बेटी मंदाकिनी, दोनों जवान हो गये थे और विवाह-योग्य थे । केशव और राजीव यही चाहते थे कि विद्याधर और मंदाकिनी की शादी हो जाये और मित्रों की मित्रता रिश्तेदारी में बदल जाये ।

एक दिन दोनों मित्रों ने अपने-अपने मन की बात अपने बेटे-बेटी को बतायी । मंदाकिनी अपने पिता के मन की बात जानकर बहुत खुश हुई । वास्तव में वह विद्याधर को जानती थी और उससे शादी करने के सपने लिया करती थी । पर विद्याधर इस शादी के लिए तैयार नहीं हुआ । उसकी नज़रों में मंदाकिनी उतनी सुंदर नहीं थी ।

केशव ने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की, पर उसका कहना था, "मुझे पत्नी के रूप में बहुत सुंदर लड़की चाहिए । मैं उसकी खोज खुद करूंगा ।"

केशव को विद्याधर का यह रुख अच्छा नहीं लगा । वह खीझकर बोला, "बात तो ऐसे कर रहे हो जैसे कि तुम कोई राजकुमार हो । मेरी बात मानो और बिना कोई हुज्जत किये मंदाकिनी से शादी कर लो ।"

"बेशक । मैं राजकुमार नहीं हूं । पर मुझे यह तो हक है न कि मैं अपनी पसंद

की लड़की से शादी करूं । मुझे सुंदर लड़की चाहिए, और उसे ढूंढ़ने के लिए मैं देशाटन पर जाऊंगा ।" और यह कहकर विद्याधर तुरंत घर से निकल पड़ा ।

इधर राजीव को जब विद्याधर के इरादे का पता चला तो वह बहुत दुखी हुआ । पर मंदाकिनी विद्याधर के इरादे से रत्ती भर भी विचलित न हुई । वह बोली, "कुछ लोग ऐसे होते हैं जो केवल सपनों में जीते हैं । विद्याधर भी उन्हीं में से है । पर कोई बात नहीं । मैं उसका मन बदलूंगी, और उसी के हाथों से अपने गले में मंगल-सूत्र पहनवाऊंगी । इसके लिए मुझे समय चाहिए और आप की अनुमति भी ।"

राजीव ने अपनी बेटी की बात मान ली । मंदाकिनी ने एक पुरुष का वेश धारण किया और विद्याधर की खोज में निकल पड़ी । खोजते-खोजते, आखिर वह उससे एक गांव में जा ही मिली ।

पुरुष वेश में होने के कारण विद्याधर उसे पहचान न सका । मंदाकिनी ने विद्याधर से प्रश्न किया, "क्या मैं जान सकता हूं कि तुम्हारा यह देशाटन कब खत्म होगा?"

"मैं एक अद्भुत सुंदरी की खोज में हूं ।" विद्याधर बोला । "मैं उसी से शादी करूंगा, चाहे यूं ढूंढ़ते-ढूंढ़ते बरसों क्यों न बीत जायें । मैं विवाह करूंगा तो उसी से, किसी ऐरा-गैरा लड़की से नहीं । खैर, मेरी बात छोड़ो । अपनी बात बताओ ।"

"मैं संगीत से प्यार करता हूं," पुरुष वेश में मंदाकिनी बोली, "लड़की के रूप-सौंदर्य से मुझे कुछ लेना-देना नहीं । कुछ वर्ष पहले मैंने एक ऐसी लड़की से प्यार किया था जो ज़रा भी सुंदर न थी, पर उसका स्वर कोयल के स्वर के समान था । वह बड़ी सुरीली आवाज़ में गाया करती थी । एक दुर्घटना में उसका वह स्वर नष्ट हो गया और वह गूंगी हो गयी । मुझे इससे बहुत धक्का लगा और मैं वैरागी बन गया । तभी से मैं अपने मन की शांति के लिए जगह-जगह घूम रहा हूं ।"

"इस ज़िंदगी के रंग-ढंग भी न्यारे हैं ।" विद्याधर बोला, "मुझे मूर्ख मत समझना । मैं अपनी पत्नी सुंदर से सुंदर चाहता हूं । मेरी पत्नी रंभा, ऊर्वशी, किसी से भी सुंदरता

में कम नहीं होगी। मुझे उसके कंठ-वंठ की कोई चिंता नहीं। वह कैसा भी हो।" विद्याधर अपनी बहक में बोल गया।

"अच्छा, यह बात है। पहले क्यों नहीं बताया?" मंदाकिनी ने कुछ सोचते हुए कहा। "हां, याद आयी। एक साल पहले मैं अपने पिता जी के साथ तीर्थ-यात्रा पर गया था। लौटते समय यहां पास के एक विश्राम-गृह में ठहरा। उस विश्राम-गृह को एक ग़रीब औरत चलाती थी। उसकी एक बेटी थी। वह बहुत ही सुंदर थी। उसके सौंदर्य की चारों ओर, देश-परदेश में, चर्चा थी। अगर तुम चाहो, तो हम वहां चलते हैं। तुम उसे देख लो।"

"हां, हां, जरूर चलेंगे।" विद्याधर जैसे कि एकाएक उछल-सा पड़ा।

मंदाकिनी और विद्याधर, दोनों, शहर पहुंचे। विश्राम-गृह वहीं था। वे सीधे वहीं गये। वहां भोजनालय भी था। वे वहीं ठहर गये। उसका संचालन एक ग़रीब औरत ही कर रही थी। उसने उनका मुंह-हाथ धुलवाया, पीने को पानी दिया और फिर उनके सामने खाना परोस दिया।

भोजन करते समय मंदाकिनी ने उस ग़रीब भठियारिन को बातों में लगा लिया। बोली, "साल भर पहले, जब मैं यहां आया था, तब मैंने तुम्हारी बेटी को देखा था। वह देवकन्या जैसी दिखती थी। अब वह कहां है? दिखाई नहीं दे रही।"

भठियारिन का चेहरा उतर गया। उसने दुखी स्वर में कहा, "तुम तो एक साल पहले की बात कर रहे हो। तुम अगर डेढ़ साल पहले भी यहां आये हो तो तुमने उसकी केवल तस्वीर ही देखी होगी। देवकन्या-सी सुंदर। उफ! क्या बात कह दी तुमने।" और उसने उसका एक चित्र लाकर उनके सामने रख दिया।

चित्र में जो लड़की थी, वह वास्तव में बड़ी सुंदर थी। विद्याधर उसे देखकर उस पर मुग्ध हो गया। बोला, "तुम्हारी बेटी है कहां? उसे एक बार बुलाओ तो!"

भठियारिन हिचकिचाती हुई अपनी बेटी को अपने साथ लिवा लायी। उसे देखकर विद्याधर एकदम भौंचक रह गया। उसके चेहरे पर काले दाग, और उसकी एक

आंख में फफोला था ।

भठियारिन अपनी आंखें पोछती हुई बोली, "यह बात तकदीर का खेल है । मैं इसकी शादी कर देना चाहती थी, पर एक भयंकर बीमारी ने इसे आ दबोचा । आदमी के लिए कुछ भी शाश्वत नहीं है, न यह रूप और न ही यह जवानी ।"

गरीब भठियारिन की बात सुनकर विद्याधर को ऐसे लगा जैसे उसकी पीठ पर किसी ने कोड़े बरसाये हों । वह दुविधा में पड़ गया । मान लो किसी की किसी देवकन्या से शादी हो भी जाती है, पर उस देवकन्या की सुंदरता क्या उम्र भर बनी रहेगी? भठियारिन की बेटी इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण है । ठीक है, मंदाकिनी बहुत सुंदर नहीं है, पर वह असुंदर भी तो नहीं है । सामान्य सौंदर्य तो उसके पास है ही । और सब से बढ़कर तो उसका मन है जो बहुत ही सुंदर है । यह तो वैसे ही हुआ जैसे कोई घर में बढ़िया मक्खन पड़ा होने के बावजूद बाज़ार में अच्छे घी को खोजता फिरे । सुगंध से भरपूर फूल जैसी है मंदाकिनी । और यदि वह चारों दिशाओं में भटकता भी रहा, तो उसे क्या मिलेगा? सुगंधहीन फूल!

विद्याधर पेट भर भोजन भी न कर सका । वह वैसे ही वहां से उठ गया । फिर उसने भोजन के पैसे चुकाये और पुरुष वेश में मंदाकिनी से बोला, "मैं अपने गांव वापस जा रहा हूं । मैं अब ऐसी लड़की से शादी करूंगा जिसका मन बहुत सुंदर है । तुम्हें अपने मधुर स्वर की खोज अकेले ही करनी होगी । पर हां, तुम्हारी दोस्ती के लिए मैं तुम्हारा आभारी हूं । यह दोस्ती कब हुई, कैसे हुई, पता ही नहीं चला । जितने दिन साथ-साथ रहे, बहुत अच्छा समय बीता ।.. अच्छा, अब मैं चलूंगा," और यह कहकर विद्याधर वहां से रवाना हो गया ।

विद्याधर जिस दिन अपने गांव पहुंचा, मंदाकिनी भी उसी दिन अपने गांव लौटी । गांव लौटकर उसने अपने पिता को वह सब कुछ बताया जो उसके साथ घटा था । बेटी की बात सुनकर राजीव बहुत खुश हुआ ।
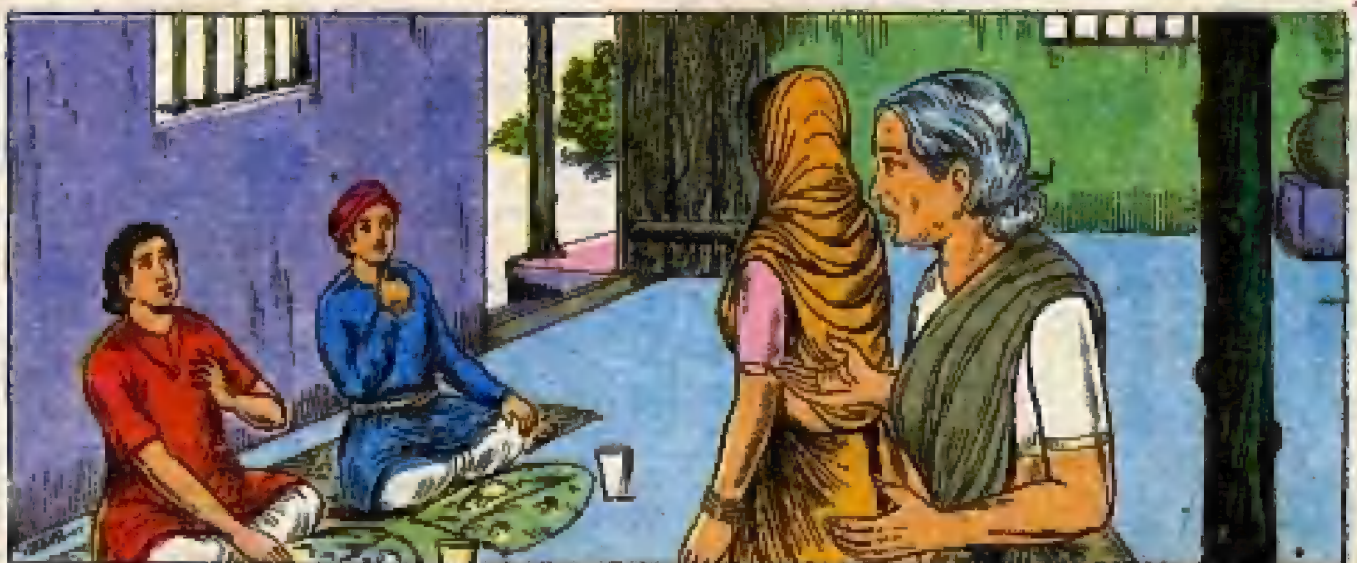
चन्दामामा परिशिष्ट-४१

भारत के पशु-पक्षी

चील

चील गिद्ध-परिवार से है । पक्षियों में यह सब से बड़ी है । इसके खुले परों का विस्तार लगभग छः फुट (२ मीटर) होता है और इसका रंग काला-भूरा होता है । यह एक शिकारी पक्षी है जिसकी दृष्टि बहुत ही तेज, दूरबीक्षण-यंत्र-सी, होती है । इससे यह बहुत दूर से ही अपने शिकार को खोज लेता है और ऐन निशाने पर उसपर आ झपटता है । इसकी चोंच और पंजे बड़े तीखे होते हैं । यह उड़ते-उड़ते इतनी ऊंचाई पकड़ लेता है जिस पर बहुत से अन्य पक्षी नहीं पहुंच पाते । यह अपना घोंसला ऊंची पहाड़ी चोटियों और चट्टानों पर बनाता है । इन सब उत्तम गुणों के कारण लोग चील को पक्षियों का "सरताज" कहने लगे हैं ।

हिंदू पुराणों में चील का विशेष स्थान है । गरुड़, भगवान् विष्णु का वाहन है । एक समूचा पुराण ही गरुड़ के नाम पर है । गरुड़ विनता का पुत्र था । विनता ऋषि कश्यप से ब्याही गयी थी । वह दक्ष प्रजापति की पुत्री थी । विनता के अतिरिक्त उसकी बारह बहनें भी ऋषि कश्यप से ब्याही गयी थीं । वैसे दक्ष प्रजापति की साठ बेटियां थीं । ऋषि कश्यप को इस सृष्टि के सभी प्राणियों का जनक माना जाता है ।

कहते हैं एक बार गरुड़ इंद्र के पास अपनी मां की बहन, कद्रू, के लिए थोड़ा अमृत लेने गया ताकि कद्रू विनता के साथ दासी का-सा व्यवहार न करे । कद्रू सभी सर्पों की जननी मानी जाती है । इंद्र ने अमृत देने से इनकार कर दिया, पर गरुड़ ने किसी-न-किसी तरह थोड़ा-सा अमृत ले ही लिया । इससे गरुड़ और इन्द्र के बीच युद्ध छिड़ गया । पर हार इन्द्र की ही हुई । इन्द्र ने अब गरुड़ से पूछा कि वह क्या चाहता है । गरुड़ ने कहा कि वह विष्णु की सेवा करना चाहता है । तब सब देवताओं ने इंद्र के नेतृत्व में विष्णु से प्रार्थना की कि वह गरुड़ को अपनी सेवा में ले लें और उन्होंने उसे अपना वाहन बनाना स्वीकार कर लिया ।

अन्य प्रसिद्ध गिद्धों के नाम हैं-जटायु, संपाती, सुपर्ण तथा अरुण ।

दो वर्ष की आयु से सिने कलाकार

"एक्शन!" मलयालम फिल्म "किलुकंपेटी" (झनझुनेवाला) के निर्देशक ने कहा, और पांच-वर्षीय चिकू ने, जिसका काम एक दृश्य में रोना था, कैमरे के सामने आंसुओं की झड़ी लगा दी। न, अन्य सिने जगत के अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की तरह उसने ग्लीसिरीन का सहारा नहीं लिया। ये आंसू अपने आप आये थे, जैसे कि वह उस भूमिका में पूरी तरह उतर गयी हो। सबसे बड़ा ताज्जुब तो तब हुआ जब निर्देशक ने कहा, "कट", और उसने फौरन रोना बंद कर दिया, गोया किसी ने बटन दबा दिया हो।

चिकू, दरअसल, बेबी श्यामली का इस निर्माणाधीन फिल्म में भूमिका-नाम है। तुम्हें याद होगा कि पिछले वर्ष उसे तमिल फिल्म "अंजलि" में अपनी भूमिका शानदार ढंग से निभाने के लिए सर्वश्रेष्ठ "बाल कलाकार पुरस्कार" मिला था। इस समय वह एक फिल्म में अपनी भूमिका के लिए एक लाख रुपया लेती है। पर यह जानकर हमें ज़्यादा ताज्जुब नहीं होना चाहिए कि यही श्यामली भारत की सबसे कम उम्र कर-दात्री है। वह मलयालम, तमिल और तेलुगू फिल्मों में काम करती है।

पांच वर्ष की बालिका के लिए क्या यह बहुत ज़्यादा नहीं है?-पहले उसके पिता ए.एस. बाबू निर्देशक से पूरे निर्देश लेते हैं और संवादों पर भी चर्चा करते हैं। उन निर्देशों के अनुसार वह कई दिन तक श्यामली से अभ्यास कराते हैं, और उसे बताते हैं कि उसे कैसे खड़ा होना है, कैसे चलना है, कैसे देखना है और कैसे रोना है। यह बात वह बहुत आसानी से समझती है और जैसा उससे कहा जाता है, कैमरे के सामने ठीक वैसा ही करती है।

हमें अब पता चल चुका है कि श्यामली को वह उतना बड़ा पुरस्कार कैसे मिला। उसके पिता श्री बाबू सैट पर उसके साथ जाते हैं और हमेशा उसी के साथ-साथ रहते हैं। वह उसे खाना खिलाते हैं, उसे पोशाक पहनाते हैं और रूपसज्जा में भी उसकी मदद करते हैं। कभी-कभी वह बहुत तुनक-मिजाजी पर भी उतर आती है। उसके पिता इसका इलाज जानते हैं। वह उसके कान में फुसफुसाते हैं, "ढेर सारे चॉकलेट और मिठाइयां मिलेंगी!"

औसतन श्यामली महीने में बीस दिन "शूटिंग" पर जाती है। बाकी दस दिन वह स्कूल जाती है। तुम अक्सर उसे रोते (हां वास्तव में) सुन सकते हो : "मैं स्कूल जाना चाहती हूं (हर रोज) और पढ़ना चाहती हूं।" घर में तो वह कभी-कभी जंगली बन जाती है, और अपने भाई रिचर्ड तथा बहन शालिनी पर खूब रौब गांठती है। शालिनी भी दस साल की उम्र तक फिल्मों में काम करती रही।

श्यामली पहली बार फिल्मों में दो साल की उम्र में आयी। अगर उसके पिता की चली तो वह अगले पांच साल और "अभिनय" करेगी।

क्या तुम जानते हो?

१. "स्वर्ण मंदिर" तुम्हें कहां देखने को मिलेगा?
२. दुनिया का सबसे पुराना चिड़ियाघर कहां है?
३. १४५२ में जन्मे एक इटालियन को कलाकार, संगीतज्ञ, गणितज्ञ और आविष्कारक के नाते ख्याति मिली । वह कौन था?
४. पहली वर्ग पहेली कहां और कब प्रकाशित हुई थी?
५. ऐसा विश्वास किया जाता है कि अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने एक लड़की से पत्र पाने के बाद दाढ़ी रखनी शुरू कर दी । वह लड़की कौन थी?
६. अगले ओलिंपिक खेल बार्सेलोना (स्पेन) में जुलाई में होंगे । पहली बार ओलिंपियाड कब हुआ? आधुनिक ओलिंपिक खेल पहली बार कब और कहां हुए?
७. "कराटे" शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है?
८. भारत में यूनानी यात्री मेगस्थनीज़ किसके दरबार में आया?
९. गांधी जी अक्सर अपने राजनीतिक गुरु का ज़िक्र किया करते थे । वह कौन था?
१०. जुलाई का महीना जूलियस सीज़र के नाम पर पड़ा । उसके भतीजे के नाम पर किस महीने का नाम पड़ा?
११. अकबर का राजस्व मंत्री कौन था?
१२. 'रघुवंश' का रचनाकार कौन है?
१३. चूहे को विघ्न-हरण या गणेश का वाहन कहा जाता है । भारत में एक ऐसा मंदिर भी है जहां चूहों को पूजा जाता है, भोजन दिया जाता है और उनका संरक्षण होता है । वह कौन-सा मंदिर है?
१४. नेपोलियन को पहले किस टापू में निर्वासित किया गया?
१५. किस देश के राष्ट्रीय झंडे पर गरुड़ पक्षी और सर्प के चित्र हैं?

उत्तर

१. बीजिंग
२. वियना (आस्ट्रिया) के शोनब्रून में । इसका निर्माण १७५२ में हुआ था ।
३. लियोनार्डो डा विंची ।
४. २१ दिसंबर, १९१३ को "न्यूयार्क वर्ल्ड" में । इसे आर्थर विन ने तैयार किया था ।
५. ग्रेस बेडेल ।
६. ७७६ ईसा पूर्व ओलिंपिया (ग्रीस) में । आधुनिक ओलिंपिक खेल पहली बार १८९६ में अथेंस (ग्रीस) में खेले गये ।
७. खाली हाथ ।
८. चंद्रगुप्त मौर्य
९. गोपालकृष्ण गोखले ।
१०. अगस्त-अगस्तस सीज़र ।
११. टोडरमल
१२. कालिदास
१३. राजस्थान में "करनी माता" ।
१४. एल्बा
१५. मैक्सिको

दो मील लंबा पत्र

कुछ लोगों को अपने मित्रों और रिश्तेदारों को लंबे-लंबे पत्र लिखने की आदत है। लेकिन नेपाल के बीस-वर्षीय राजेंद्र चंद ठकुरी का मुकाबला कौन करेगा। उसने भारत में अपने एक मित्र को पत्र लिखा। हां, ज़रा अपना दिल थामकर सुनो-वह १०, ३१५ पृष्ठों का था। उसका वज़न? ४२ कि. ग्रा.। उस नेपाली छात्र ने हिसाब लगाया कि यदि ५,१५३ पृष्ठों को साथ-साथ रखा जाये तो वे ३ कि.मी. तक फैल जायेंगे। मित्र को वह पत्र नये वर्ष में मिला, लेकिन फरवरी में वह उसे अभी पढ़ ही रहा था।

चंदामामा की खबरें

जान कैसे बची

उत्तर-पश्चिमी आस्ट्रेलिया के एक निर्जन इलाके में एक नदी के पास पशु-बाड़े की देखभाल कर रहे कुछ लोगों को बेहद अचंभा हुआ जब १६ जनवरी को उनके सामने ३५ चीनी पुरुष और महिलाएं प्रकट हो गयीं। उनका कहना था कि उनकी नाव नष्ट हो गयी थी और उन्हें घनी झाड़ियों में से अपनी राह बनानी पड़ी। बाद में उनकी वह टूटी- फूटी नाव उस पशु-बाड़े से २०० कि.मी. दूर टिमोर समुद्र में स्विफ्ट बे पर मिली। ताज्जुब इस बात का होता है कि वे इतने दिन जीवित कैसे रहे। उनका कहना है कि पहले उन्होंने एक तीन मीटर लंबा मगरमच्छ मारा, उसका थोड़ा-सा हिस्सा खाया और बाकी को बाद में खाने के लिए सुखाकर रख लिया। वे सांप भी खाते रहे। एक बार उन्होंने एक बहुत बड़ी छिपकली को पकड़ा। वह पेड़ पर चढ़ रही थी। उसका मांस उन्हें बड़ा स्वादिष्ट लगा। लेकिन जो पक्षी उन्हें रास्ते में मिलते रहे, उन्हें उन्होंने बख्श दिया। पशु बाड़े के मालिक ने कहा, "इतने सख्तजान तो हम भी नहीं हैं। भई, मान गये!"

कुतर्क का लाभ

चतुरसेन राजा विक्रमसेन का महामंत्री था। राजा विक्रमसेन राज-पाट के कार्यों में हमेशा उससे सलाह लेता। उधर महामंत्री चतुरसेन के पास विचार-विमर्श के लिए दस मंत्री थे। राजा विक्रमसेन को कोई सलाह देने से पहले वह इन मंत्रियों से ज़रूर सलाह-मशविरा करता।

उन दस मंत्रियों में शचींद्र नाम का भी एक मंत्री था। वह बड़ा गुस्ताख और हठी था। जब सभी मंत्री "हां" कहते, तो वह ज़रूर "न" कह देता। और यदि वे किसी बात पर "न" कहते, तो वह ज़रूर "हां" कह देता। पर विचार-विमर्श के लिए महामंत्री चतुरसेन ऐसे व्यक्ति की उपस्थिति आवश्यक समझता था, और इसीलिए उसकी गुस्ताखी सहन करता था।

शचींद्र को चुगली करने की भी ज़बरदस्त आदत थी। वह अक्सर राजा के यहां फरियाद करता कि उसकी बात सुनने वाला कोई नहीं।

तब राजा उसे समझाते हुए कहता, "महामंत्री के फैसले पर मुझे पूरा विश्वास है। वह बहुमत से चलता है। तुम्हारे विचार, लगता है, अधिकतर लोगों को पसंद नहीं आते। उनमें कोई न कोई कमी रहती ही होगी। तुम उस कमी का पता लगाओ और उसे दूर करो।"

एक दिन राजा विक्रमसेन ने अपने सभी मंत्रियों को बुलवाया और उन्हें शचींद्र की फरियाद के बारे में बताया। फिर वह बोला, "तुममें से हर किसी के अपने विचार हो सकते हैं। पर उन्हें मान्यता तभी मिलेगी जब औरों को भी वे पसंद आयें।"

राजा के यहां से लौटने के बाद सभी मंत्रियों ने शचींद्र को फटकारा और कहा, "ऐसे विचार रखो जो दूसरों को भी पसंद आयें।

· रजनी वर्मा

तभी तुम्हारे विचार कोई मानेगा । राजा भी यही बात कह रहे थे । सुन रहे थे ना ।"

अपने साथी मंत्रियों की बात सुनकर शचींद्र गुस्से में आ गया और बोला, "तुम लोग देखते रहो । एक दिन ऐसा आयेगा जब मेरे विचार, चाहे वे तुम्हारे विचारों से मेल न भी खाते हों, राजा को जरूर पसंद आयेंगे, और वह मुझे सम्मान देंगे ।"

ऐसे ही कुछ दिन बीत गये । राजा विक्रमसेन शिकार से लौटा था । शचींद्र ने अपने सभी मंत्री-साथियों से बात की और बोला,"हमारे राजा शिकार से लौटे हैं । उन्होंने वहां अदभुत कुशलता दिखायी है । वह हमारी बधाई के पात्र हैं । मेरी राय में हम सब को उनके यहां जाकर उन्हें बधाई देनी चाहिए ।"

शचींद्र का प्रस्ताव दूसरे मंत्रियों को पसंद नहीं आया । वे बोले, "हमारे राजा के लिए यह बहुत साधारण बात है । शिकार पर तो जाते ही रहते हैं, और उनके साहस से हम सब भली भांति परिचित हैं । हां, उन्होंने अगर किसी महान काव्य की रचना की होती, या युद्ध में अभूतपूर्व विजय पायी होती, या किसी दुर्दांत राक्षस का संहार किया होता, या कोई और महान कार्य किया होता, तब तो उन्हें बधाई देना उचित होता, लेकिन इस छोटी-सी बात पर नहीं ।"

पर महामंत्री चतुरसेन ने शचींद्र की बात की पुष्टि की । वह बोला, "शचींद्र ठीक कहता है । हमें राजा को ठीक तरह से बधाई देनी चाहिए ।" और यह निर्णय लेने के बाद उसने राजा को बधाई देने की जिम्मेदारी शचींद्र को ही सौंपी ।

महामंत्री चतुरसेन से अपनी बात की पुष्टि पाकर शचींद्र में एकदम घमंड उमड़ पड़ा । उसने बाकी मंत्रियों की ओर तिरस्कार मे देखा और वहां से चला गया ।

शचींद्र के ऐसे व्यवहार से दूसरे मंत्री अपने को अपमानित अनुभव करने लगे । तब चतुरसेन उनसे बोला, "इस तरह शिकार से लौटे राजा को बधाई देना मुझे भी जंच नहीं रहा था, लेकिन शचींद्र की आदत तो तुम लोग जानते ही हो । हम लोग अगर मना कर देते तो शचींद्र राजा के पास फरियाद लेकर पहुंच जाता, और जब राजा को यह

पता चलता कि शचींद्र ने हमें बधाई देने की सलाह दी थी और हमने उसे एक तरफ कर दिया, तो राजा को शायद यह बहुत नागवार गुज़रता । दरअसल, किसी भी राजा को यह नागवार गुज़र सकता है । तब राजा उसकी हर बात पर कान देने लगते और यह देश के लिए बहुत हानिकारक हो सकता था । हां, अगर तुममें से किसी ने यह प्रस्ताव रखा होता तो मैं ज़रूर उसका खंडन करता । पर यह प्रस्ताव क्योंकि शचींद्र का था, मुझे मानना पड़ा । कभी-कभी यह मज़बूरी भी हो जाती है । हमें ऐसी स्थिति पर हर प्रकार से विचार करना चाहिए । और उसके परिणाम भी सोच लेने चाहिए ।"

दूसरे मंत्री इस उत्तर से संतुष्ट नहीं थे । वे बोले, "इसका मतलब तो यह हुआ कि चुगली करने वाले के डर से हम अनुचित को भी उचित कर दें ।ऐसे चुगलखोर को आपने मंत्रीमंडल में रखा ही क्यों? उसे हटा क्यों नहीं देते?"

महामंत्री चतुरसेन दो-एक क्षण चुप रहा । फिर कहने लगा, "संसार में ऐसे भी कई लोग हैं जो बेकार के वाद-विवाद में पड़ जाते हैं । कभी-कभी ऐसे लोगों के वाद-विवाद में पड़ने से लाभ ही होता है । अब शचींद्र की बात ही लो । वह बुद्धिमान है । यह बात तुम लोगों को माननी ही पड़ेगी । बुद्धिमान है तभी तो उसने ऐसा प्रस्ताव रखा । वह जानता था कि मैं इस प्रस्ताव को नकार नहीं सकता । अब उसकी होशियारी को होशियारी से ही काटना था । अच्छा है, हमारे मंत्री-मंडल में ऐसा एक मंत्री है जो हमेशा कुतर्क से काम लेता है । उसके कुतर्क से हमें लाभ ही होगा । यदि वह मूर्खतापूर्ण दलीलें देगा तो उन्हें हम सब मिलकर काट सकते हैं ।"

महामंत्री की यह बात सब मंत्रियों को पसंद आयी । अब उनके मन में शचींद्र के प्रति कोई आक्रोश नहीं था । वे अपने को हल्का महसूस कर रहे थे । साथ ही वे महामंत्री चतुरसेन की बुद्धिमत्ता की भी मन ही मन प्रशंसा कर रहे थे।
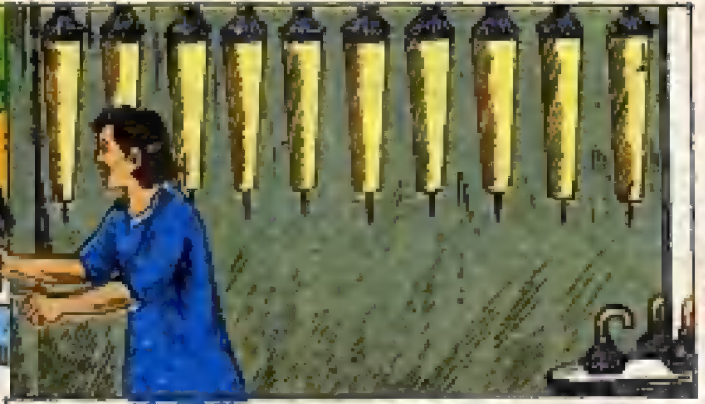
बात का कमाल

एक दिन सूरतसिंह नाम का एक व्यक्ति पड़ोस के एक गांव में पहुंचा। वहां हाट लगा था। हाट में उसे छातों की एक दुकान दिख पड़ी। फिर उसे उस दुकान में वीरसिंह बैठा दिखाई दिया। वीरसिंह उसी के गांव का था।

इतने में उस दुकान पर एक दुबला-पतला ग्राहक आया। वीरसिंह ने उसे उस छाता दिखाते हुए कहा, "देखो भाई, तुम दुबले-पतले हो। तुम्हें तो बिलकुल हल्की छतरी चाहिए न। इसे तुम जितनी दूर चाहो, ले जा सकते हो, बिलकुल थकोगे नहीं। चाहो तो फुदकते हुए जाओ।"

उस दुबले-पतले ग्राहक ने छाते को खोलकर देखा और उसके दाम चुकाकर वहां से आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद ही वहां एक मोटा-ताजा ग्राहक आया। वीरसिंह ने उसे एक छाता देते हुए कहा, "तुम थोड़े वज़नी हो। हल्की छतरी तुम्हारे किसी काम की नहीं। वह झट से खराब हो जायेगी। इसलिए तुम्हें यह एक खास छतरी दे रहा हूं।"

वह व्यक्ति छतरी को खोलकर उसे इधर-उधर से देखने लगा। तब वीरसिंह ने कहा, "बाकी चीजें छोड़ो, जब छतरी ही खरीद रहे हो तो इस बात का खास खयाल रखना होगा कि वह तुम्हारे शरीर के गठन के मुताबिक हो। इस छतरी में बड़ी जान है। चाहे तेज़ बारिश हो रही हो, चाहे तूफान ही क्यों न आ जाये, यह न झुकेगी, न टूटेगी।"

वीरसिंह की बात सुनकर वह मोटा-ताजा व्यक्ति खुश हो गया, और छाता खरीदकर वहां से चला गया।

सूरतसिंह यह सब ग़ौर से देख रहा था। वह अब दुकान के निकट गया। वीरसिंह

ने उसे तुरंत पहचान लिया और उसका कुशलक्षेम पूछने के बाद उसे तपाक से दूकान में ले गया । फिर उससे बोला, "सब कुछ ठीक-ठाक तो है न, सूरतसिंह?"

"हां, सब कुछ ठीक-ठाक है," सूरतसिंह ने वहां बैठते हुए कहा, और अपनी बात जारी रखते हुए बोला, "तुमने तो कमाल कर दिया । किस कुशलता से तुमने उन दोनों ग्राहकों को निपटाया, मैं वहां खड़ा सब देख रहा था । तुमने दुबले-पतले को भी निपटाया और मोटे-ताजे को भी । पर मैं न तो दुबला-पतला हूं और न ही मोटा-ताज़ा । अब मुझे किस तरह की छतरी दे सकते हो?"

इस पर वीरसिंह चट से बोला, "तुम्हें छतरी बेचना कौन सा मुश्किल काम है । बारिश का मौसम आ ही गया है । छतरी तुम्हारे लिए बहुत ज़रूरी है, नहीं तो बारिश में भीगोगे और स्वास्थ्य बिगाड़ोगे । स्वास्थ्य बिगड़ेगा तो बाकी काम भी चौपट हो जायेंगे । इसलिए छतरी तो तुम ज़रूर ही खरीदो ।" और यह कहते हुए वीरसिंह ने एक छतरी उठाकर सूरतसिंह को दिखायी । "यह तुम्हारे लिए हर लिहाज से ठीक रहेगी ।"

"सूरतसिंह उस छतरी को बड़े ध्यान से परखता रहा । फिर धीरे से बोला, "लगता है यह उतनी अच्छी नहीं ।"

"न, न, ऐसा मत कहो," वीरसिंह बोला, "इसे हाथ में लेकर जब चलोगे तो गांव के सबसे बड़े आदमी-जैसे दिखाई दोगे । और जब इसे खोलकर चलोगे, तब तो कहने
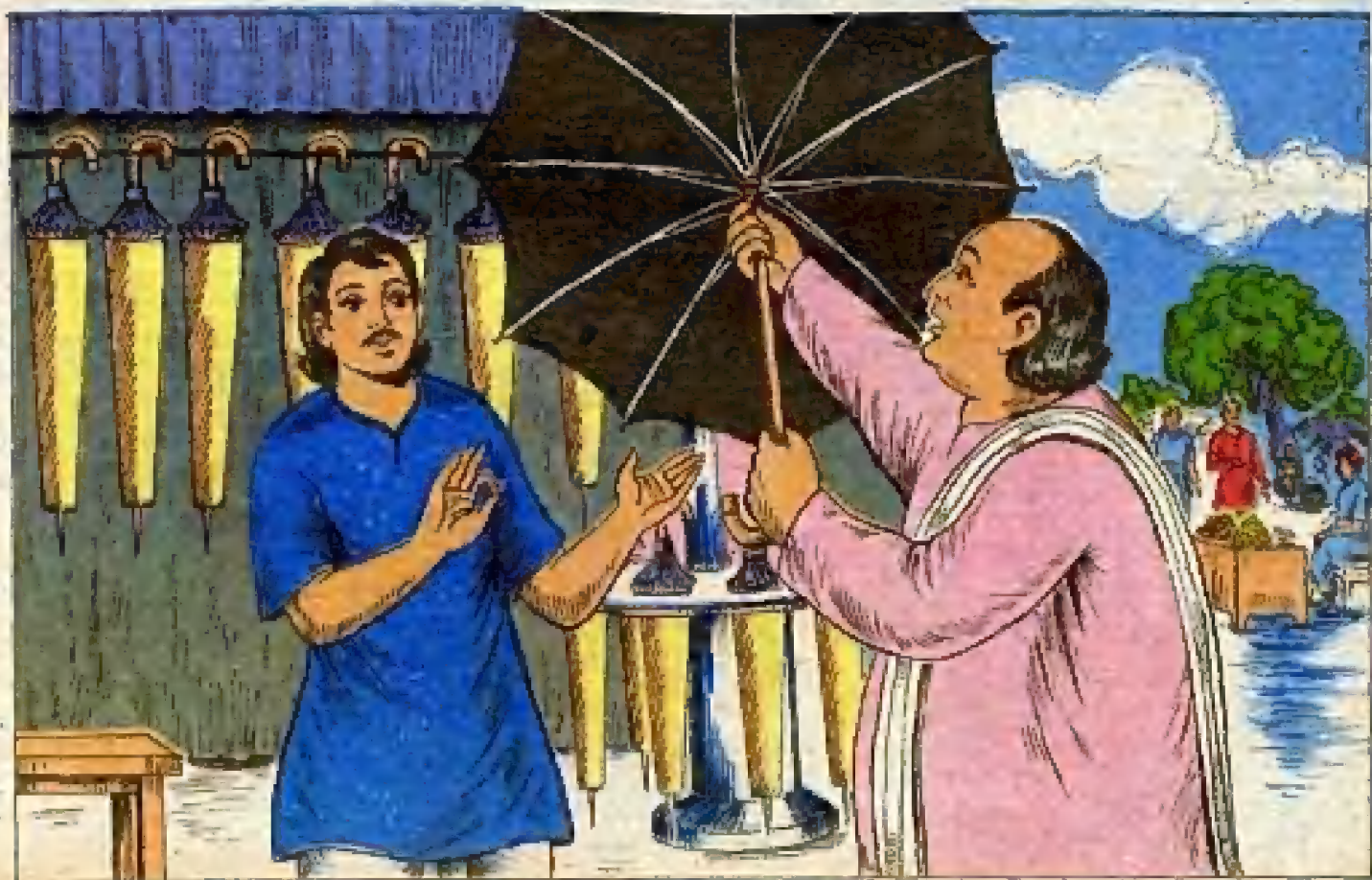
ही क्या । तुम्हारे चेहरे पर ज़मींदार का सा रौब दिखाई देने लगेगा । और जब घोड़े पर सवार होकर इस छाते को हाथ में लिये वहां से निकलोगे, तो तुम साक्षात इस देश के महाराजा ही लगोगे ।"

सूरतसिंह ने छतरी खोली और उसे अपने हाथ में ले लिया । फिर बोला, "मुझे तुम्हारी बात पर यकीन नहीं होता ।"

वीरसिंह एक कदम पीछे हटा और अपना सर हिलाते हुए बोला, "मैंने जो कुछ भी कहा, उसमें रत्तीभर भी झूठ नहीं, सूरतसिंह जी । इस छाते को थामे आप जैसे खड़े हैं, आप का पूरा नक्शा ही बदल गया है ।"

सूरतसिंह को वीरसिंह की बात सुनकर हैरानी हुई । उसने कहा, "यह क्या । आज तक तो तुम मुझे तुम ही कहते थे, अब मैं तुम से आप कैसे हो गया?"

वीरसिंह अब बिलकुल भीरू हो रहा था । "इस छाते के नीचे आपको देखकर मैं आप को तुम नहीं कह सकता । इतना साहस अब मुझमें नहीं ।"

सूरतसिंह वीरसिंह की होशियारी पर गदगद हो गया । "ठीक है, मैं यह छाता लिये लेता हूं ।" उसने कहा और छतरी के दाम चुकाकर धीरे से वीरसिंह से फुसफुसाता हुआ बोला, "वीर भाई, आपस की बात है । सच-सच बताना, मैं किसी से नहीं कहूंगा । मैं वादा करता हूं । क्या वाकई तुम्हारे पास लंबे-ठिगने, मोटे-पतले हर तरह के आदमी के लिए छाते हैं?"

सूरतसिंह की बात सुनकर वीरसिंह ठठाकर हंसा और बोला, "नहीं, सूरतभाई, नहीं । यह सब छाते एक जैसे हैं । बस, जैसा ग्राहक देखता हूं, वैसी बात कह देता हूं । ग्राहक को मेरी बात पसंद आती है । अगर ऐसी बातें न करूं तो मेरे छाते कौन खरीदेगा?"

सूरतसिंह अब समझ गया था कि इस तरह के कारोबार के लिए वीरसिंह की तरह बातूनी होना बहुत ज़रूरी है । वह भी अब ज़ोर से हंसा और अपना छाता लेकर अपने गांव की ओर बढ़ गया ।
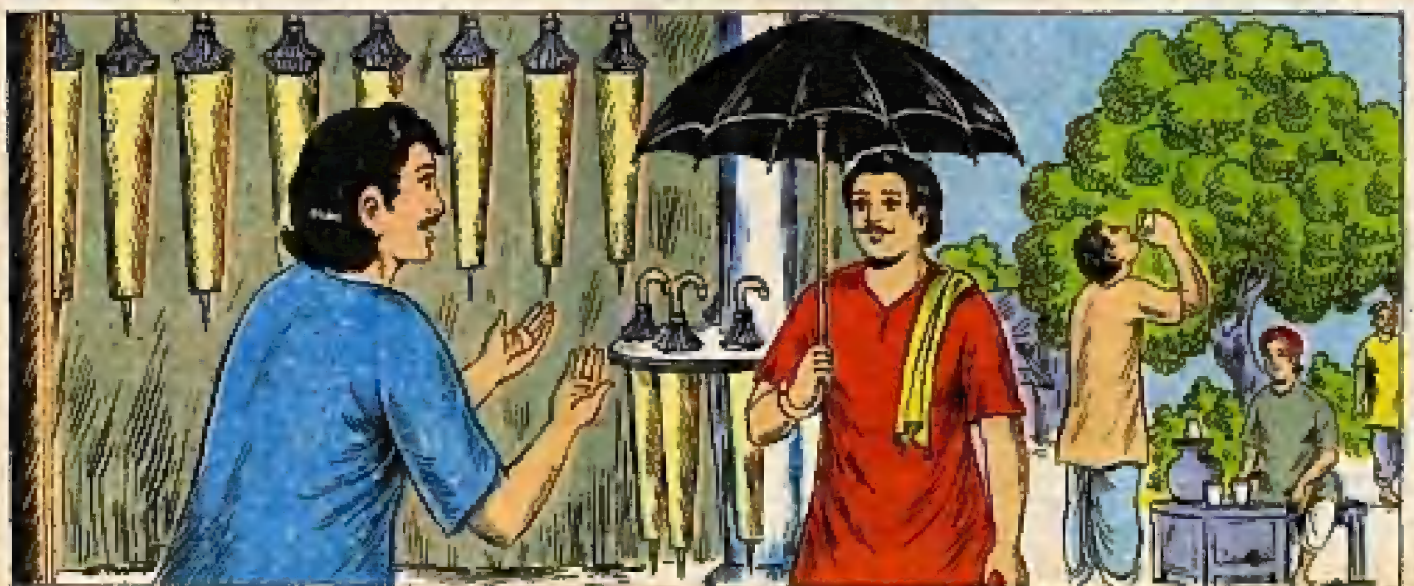
जीतू-मीतू

जीतू देवभक्त था। रोज़ भगवान् की पूजा करता और पूजा किये बग़ैर पानी न पीता। रात को भी वह भगवान् को नमन किये बग़ैर न सोता।

एक रात उसे सपने में भगवान् दीख पड़े। उन्होंने कहा, "भक्त, मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?"

जीतू ने भगवान् से, बस, इतना ही कहा, "भगवान्, मेरे घर के सामने वाले घर में मीतू नाम का एक व्यक्ति रहता है। वह घोर नास्तिक है। उसमें भक्ति जगाओ।"

"चिंता मत करो, मैं तुम्हें वाक-सिद्धि दे रहा हूं। तुम उसके बल पर मीतू में भक्ति भावना जगाओ।" भगवान ने कहा।

सुबह जब जीतू जगा तो उसने मीतू को आवाज़ देकर बुलाया, और उससे बोला, "कल रात भगवान् ने मुझे दर्शन दिये और कहा कि मैं तुम्हें सद्मार्ग पर लाऊं। आज से तुम भगवान् की पूजा करना शुरू कर दो। ऐसा नहीं करोगे तो तुम्हारे घर के पिछवाड़े में जो नारियल का पेड़ है, वह जलकर राख हो जायेगा।"

"अच्छा, तो यह बात है। चलो, यह भी देखे लेते हैं। पर मैं तुम्हारे भगवान् की पूजा करने से तो रहा।" मीतू बोला।

इतने में मीतू की पत्नी आयी और उसने बताया कि घर के पिछवाड़े में जो नारियल का पेड़ था, वह जलकर राख हो गया।

अब मीतू से सहन न हो सका। गांव के छोर इमली का पेड़ था पर जो वह वहीं पहुंचा, और ज़ोर से चीखा, "ऐ इमली के पिशाच। तुमने कई बार मेरी मदद करनी चाही, लेकिन मैं तुम्हारी मदद लेने से इंकार करता रहा, आज मुझे यह ज़रूरी है।"

"यदि मेरे पास किसी उपकार की भावना से आये हो, तब नहीं। मैं केवल अपकार ही कर सकता हूं," पिशाल बोला।

इस पर मीतू ने पिशाच को वह सब बता

ममता द्विवेदी

दिया जो उस पर बीता था ।

मीतू की बात सुनकर पिशाच बोला, "ग़म मत खाओ । जाकर देखना कि जीतू का घर धराशायी हो चुका होगा ।"

पिशाच ने जैसा कहा था, वैसा ही हुआ । जीतू अब बहुत गुस्से में आ चुका था । उसने अपनी वाक-सिद्धि का प्रयोग किया जिससे मीतू का घर भी नीचे आ गया ।

मीतू कहां चुप बैठने वाला था । फिर पिशाच की मदद से उसने जीतू के घर का जो कुछ बचा था, उसे भी तबाह करवा दिया, और साथ में उसके खेतों को भी ।

शाम होने तक जीतू और मीतू, दोनों तबाह हो चुके थे । अब कुछ-कुछ उन्हें अक्ल आयी । वे समझ गये कि गुस्से में जो कुछ उन्होंने किया, ठीक नहीं किया । फिर जीतू ने मीतू से कहा, "तुम प्रतिकार के लिए एक पिशाच के पास गये । मैं यह बात समूचे गांव को बताऊंगा ।"

मीतू का उत्तर बड़ा सहज था । बोला, "हम दोनों ने ही जिन पर विश्वास किया, उनमें कोई अंतर दिखाई नहीं देता । मैं जानता था कि पिशाच क्या कर गुज़र सकता है । इसलिए मैं उससे दूर रहता था । लेकिन जब तुमने भगवान् के नाम पर मुझे सताना शुरू कर दिया तो मुझे मजबूर होकर उसके पास जाना पड़ा ।"

"तुम ठीक कहते हो," जीतू बोला, "अगर तुम नास्तिक होकर किसी को किसी तरह का नुक्सान नहीं पहुंचाते, तो इससे बढ़कर और क्या हो सकता है । मैं ख्वाहमख्वाह तुम्हें बदलने के झमेले में पड़ गया और यह आफत मोल ले ली ।"

उस रात भगवान् ने जीतू की जो हानि हुई थी, उसकी पूर्ति कर दी । उधर पिशाच को भी जब मीतू ने खूब डांट-फटकार पिलायी तो उसने भी उसकी क्षति-पूर्ति कर दी ।

इस तरह जीतू को भगवान् से ठीक से रहने का उपदेश मिल चुका था ।
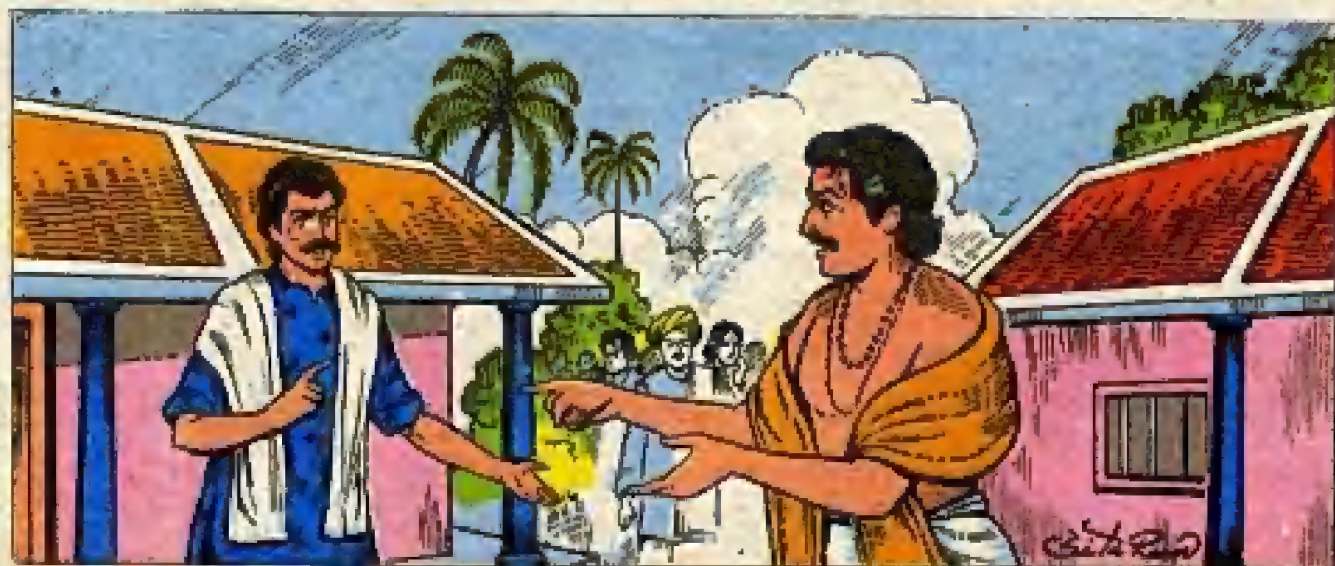
अशोक वाटिका में बंदी सीता को जब रावण देखने गया तो वह राक्षसियों के बीच घिरी बैठी, राम के बारे में सोचती हुई, आंसू बहा रही थी ।

जैसे कि कोई खुशखबरी लाया हो, सीता को देखकर रावण बड़े उत्साह से बोला, "सारा खेल खत्म हो गया । राम युद्ध में मारा गया है । अब तुम बिना किसी बाधा के मेरी पत्नी बन सकती हो । अपनी पत्नियों में मैं तुम्हें सबसे ऊंचा स्थान दूंगा । राम कैसे मरा, यह भी बताता हूं । राम वानरसेना के साथ सागर पार करके यहां पहुंचा था । थके-मांदे सब गहरी नींद में सोये पड़े थे । तब प्रहस्त ने भारी राक्षस सेना के साथ वहां पहुंचकर समूची वानर सेना को नष्ट कर दिया ।

"राम भी नींद में डूबा हुआ था । प्रहस्त ने स्वयं, अपने हाथों से, उसका सर काटा । विभीषण आकाश के मार्ग से भाग जाना चाहता था । राक्षसों ने उसे भी पकड़ लिया । लक्ष्मण और उसके साथ कुछ वानर भागने में सफल हो गये । सुग्रीव, हनुमान, जांबवान, इन सब के सर तो पहले ही कट चुके थे ।

"ये सब वानर वहां धराशायी हुए पड़े थे । अब वहां सिवाय वानरों की लाशों के और कुछ नहीं है । चारों ओर लाशें ही लाशें हैं ।"

फिर उसने दहाड़ते हुए वहां की एक राक्षसी को आदेश दिया, "जाओ,

२२. लंका नगरी पर चढ़ाई

विद्युतजिह्व को यहां बुलाकर लाओ । उसके पास राम का सर है । सीता स्वयं अपनी आंखों से देख लेगी ।"

विद्युत्जिह्व राम का सर और उनका धनुष लेकर रावण के सामने उपस्थित हुआ और रावण का अभिवादन करके वहीं अदब से खड़ा रहा ।

तब रावण उससे बोला, "सीता को दिखाओ राम का यह सर । उसके पति पर जो बीती है, वह भी ज़रा देख ले । बेचारी, अबला!"

रावण का आदेश पाकर विद्युत्जिह्व ने वह सर सीता के सामने रख दिया और स्वयं वहां से हट गया । धनुष रावण ने अपने हाथ में ले लिया था । उसे सीता को दिखाते हुए बोला, "राम नींद में था जब प्रहस्त ने उसका सर काटा । फिर वह उसका सर और धनुष लेकर मेरे पास चला आया । तुम इन्हें देख लो । मैं तुम्हारे लिए ही हूं । तुम मुझे स्वीकारो । मेरे सिवा तुम्हारा यहां कोई नहीं ।"

सीता उस सर को देर तक परखती रही । उसने पहचाना-आंखें, बाल और चूड़ामणि, सब वही तो थे । वह कैकेयी को कोसने लगी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी । फिर वह बेहोश हो गयी । जैसे ही उसे होश आया, उसने उस सर को अपने हाथों में ले लिया और राम की अप्रत्याशित मृत्यु पर देर तक विलाप करती रही । उसे लगा कौसल्या को लक्ष्मण द्वारा राम की मृत्यु का पता चलेगा तो उसका कलेजा फट जायेगा और वह वहीं ढेर हो जायेगी । अब तो राम का पूरा वंश नष्ट ही हुआ समझो । यह सब हमारे कारण ही होगा । राम यह सब नहीं जानते थे, वरना हो सकता है वह मेरे साथ विवाह ही न करते ।

सीता उसी प्रकार विलाप किये जा रही थी । फिर वह रावण से बोली, "ठीक है, मुझे तुम ले चलो और राम की लाश पर पटक दो । हम पति-पत्नी दोनों साथ-साथ ही इस दुनिया से चले जायेंगे । तुम यह पुण्य कमाओ ।"

उसी समय वहां एक राक्षस आया । उसने रावण का अभिवादन किया और उसे सूचना दी कि सेनाधिपति प्रहस्त उससे भेंट करने

आया है, और उसके साथ सभी मंत्री भी आये हुए हैं ।

यह सूचना पाते ही रावण वहां से उठ खड़ा हुआ और उनकी ओर बढ़ा । सीता देखने लगी थी, वह जैसे ही अशोक वाटिका से बाहर गया, वह सर और धनुष दोनों एकाएक अदृश्य हो गये ।

इतने में विभीषण की पत्नी, सरमा, वहां आ पहुंची । वह बड़ी नेक थी और सीता के प्रति बहुत स्नेह रखती थी ।

उसने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी और रावण की बातें सुन रही थी । यहां छिपती-छिपाती पहुंची हूं । मैंने रावण की परवाह नहीं की । तुम जानती हो रावण यहां से एकाएक क्यों चला गया? क्या तुम भेरियों के ये स्वर सुन रही हो? युद्ध बिलकुल सर पर आ खड़ा हुआ है । सेना की टुकड़ियों को तैयार-पर तैयार किया जा रहा है । हाथियों और घोड़ों को संजोया जा रहा है । युद्ध अब शुरू हुआ ही हुआ समझो । राम और लक्ष्मण सब राक्षसों का सफाया कर देंगे । तुम्हारे कष्ट शीघ्र दूर होंगे ।"

सरमा के ये सांत्वना भरे शब्द सुनकर सीता आश्वस्त हो गयी । फिर सरमा उससे बोली, "मैं आकाश-मार्ग से राम के पास जाऊंगी और उन्हें सूचना दूंगी कि तुम सकुशल हो । मैं आकाश में गरुड़ से भी तेज़ गति से चल सकती हूं । क्या तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होता?"

"विश्वास क्यों नहीं होता?" सीता ने

कहा । "मैं जानती हूं कि तुम आकाश में उड़ सकती हो और पाताल में भी पहुंच सकती हो । हां, अगर तुम वास्तव में मेरी मदद करना चाहती हो तो मुझे यह पता लगाकर बताओ कि रावण अब कहां है और क्या कर रहा है । मुझे उसी से सब से ज़्यादा डर लगता है । मुझे यह भी बताओ कि वह क्या करने जा रहा है । इससे मुझे बहुत ढाढ़स मिलेगा ।"

सरमा ने सीता के आंसू पोंछे और स्नेह से भरकर उसकी ओर देखती हुई वहां से चली गयी । फिर वह शीघ्र ही लौट आयी । उसने रावण और उसके मंत्रियों के बीच चल रही सारी बातचीत सुन ली थी । सीता को उसका वर्णन देते हुए बोलीः "रावण

से उसकी मां और उसका वृद्ध मंत्री, आविद्ध, यही कह रहे थे कि सीता को लौटा दिया जाये। वे दोनों रावण को बहुत समझाते रहे, लेकिन रावण उनकी एक भी नहीं मान रहा था। उन्होंने रावण से यह भी कहा कि सीता को न लौटाने से वह बहुत बड़े खतरे का सामना करने जा रहा है। लेकिन इस चेतावनी पर भी रावण ने कान नहीं धरा। अब जब तक रावण का अंत नहीं हो जाता, वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। उसके मंत्री भी अब उसका समर्थन करने लगे हैं।"

सरमा अभी सीता को विवरण दे ही रही थी कि वानर सेना की सिंहध्वनि, और शंखनाद सुनाई देने लगे। उनसे समूची धरती गूंज रही थी। राम लंका नगरी के बहुत निकट पहुंच गये थे।

वानर सेना का कोलाहल सुनकर रावण अपने मंत्रियों से बोला, "तुम लोगों ने पहले हनुमान के सागर पार करने को और फिर वानर सेना के आगे बढ़ आने को बड़ा बढ़ा-चढ़ाकर बताया था। मुझे वह सब याद है। अब तुम लोगों के चेहरे इसलिए उतरे हुए हैं कि तुम राम के पराक्रमों से आक्रांत हो। तुम लोग अच्छी तरह से सुनो; मेरी आंखों से यह छिपा हुआ नहीं है।"

रावण के कटाक्ष से माल्यवंत नाम का राक्षस तिलमिला उठा। वह बोला, "राजन्, जब राम हम से अधिक शक्तिशाली है, तब उससे समझौता कर लेने में क्या हानि है। राम और हमारे बीच शत्रुता का कारण केवल सीता ही है। उसे राम को लौटा दिया जाये तो यह शत्रुता अपने आप मिट जायेगी।"

उसने रावण को यह भी याद दिलाया कि राक्षसों को ऐसा कोई वरदान प्राप्त नहीं है जिससे उनकी वानरों और भल्लूकों के हाथों मौत न हो।

माल्यवंत की बात का रावण पर रत्ती भर भी असर न हुआ। उसने उसकी ओर बड़ी तीखी नज़र से देखा और बोला, "कहने को मेरी भलाई की बातें कर रहे हो, लेकिन है यह सरासर धोखा। तुम लोग कपटी हो। तुम राम से डरते हो? वह एक साधारण व्यक्ति है। वह अकेला भी है। उसके पिता ने भी उसका त्याग कर दिया। अब वह

वानरों के सहारे यहां पहुंचा है । वह जंगलों में भटकता रहा है । ऐसा व्यक्ति भला समर्थ कैसे हो सकता है । समस्त राक्षसों का स्वामी मैं हूं । समस्त देवताओं को धूल में चटा चुका हूं । वे मेरे पराक्रम से परिचित हैं। बताओ, मैं राम से किन अर्थों में कम हूं? शायद तुम लोगों को इस बात से जलन है कि तुम्हारी अपनी जाति में एक ऐसा वीर है जिससे हर कोई भयभीत है । हो सकता है तुम लोग शत्रु-पक्ष से जा मिले हो, वरना तुम इस तरह से बोलने का साहस न करते । मैं जब सीता को जंगल से उठाकर यहां लाया था, उसे लौटाने के लिए नहीं लाया था । राम से युद्ध करने को मैं तैयार हूं । मैं उससे क्यों डरूं? वह अगर मुझ से वाकई अधिक शक्तिशाली है तो मैं चाहूंगा कि मेरा सर उसी के हाथों कटे । मेरे लिए यह उचित होगा । लेकिन मेरा सर उसके सामने झुकेगा नहीं ।"

माल्यवंत समझ गया कि रावण क्रोध से पागल हो रहा है । वह चुप रहा । फिर उसने रावण को यह आशीर्वाद दिया कि उसे विजय-सिद्धि प्राप्त हो, और आशीर्वाद देकर वहां से चला गया । वह चला गया तो रावण ने अपने मंत्रियों से सुरक्षा-प्रबंध संबंधी बातचीत की ।

निर्णय, आखिर, यह रहा कि इंद्रजित पश्चिमी द्वार के पास खड़ा होगा, शुक-सारण उत्तरी द्वार संभालेंगे और विरूपाक्ष नगर के बीचों बीच सेना के साथ रहेगा । इसके बाद
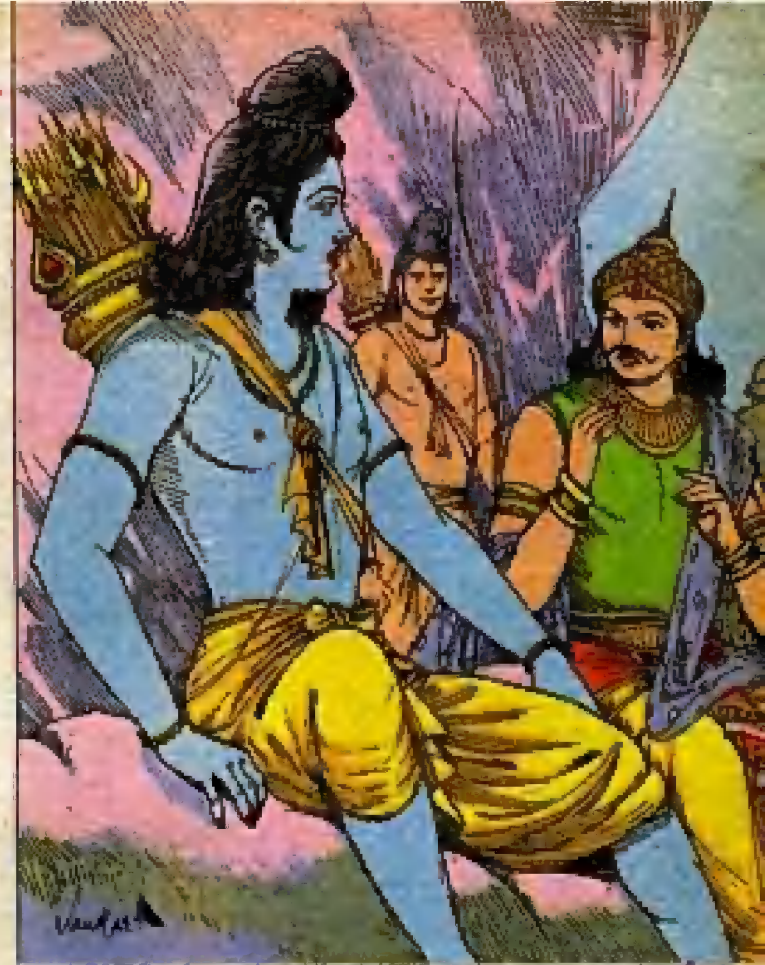
मंत्रियों ने जय-जय ध्वनि की और रावण उठकर अपने अंतःपुर में चला गया ।

राम वानर-प्रमुखों के साथ जब लंका नगरी तक पहुंचा तो वे आपस में इस प्रकार बातें कर रहे थे : "यही है लंका नगरी । इसे जीत पाना देवताओं के लिए भी संभव नहीं रहा । अब सोचिए, हमें क्या करना होगा ।"

उनकी बात सुनकर विभीषण बोला, "मेरे सहयोगी पक्षियों का रूप धारण करके लंका में प्रवेश करेंगे और वहां की समूची व्यवस्था का सर्वेक्षण करेंगे । प्रहस्त पूर्वी द्वार पर है, महोदर-महापार्श्व दक्षिणी द्वार पर है । इंद्रजित पश्चिमी द्वार पर है और विरूपाक्ष नगर के बीचों बीच सेना के साथ है ।

फिर विभीषण के सहयोगी भी सब कुछ देखकर लौट आये और उन्होंने राम को जो कुछ वहां देखा था, सविस्तार बता दिया।

अब राम को सावधान करने के लिए विभीषण ने कहा कि रावण के पास उसके बराबर बल-पराक्रम रखने वाले साठ लाख राक्षस हैं।

राम ने अपने बहादुर साथियों से पूछा कि वे किस-किस के साथ युद्ध करना चाहेंगे और इसके साथ ही आदेश के स्वर में बोले, "नल पूर्वी द्वार पर, तैनात प्रहस्त के साथ लड़ेगा। अंगद दक्षिणी द्वार पर महापार्श्व-महोदर के साथ युद्ध करेगा। हनुमान पश्चिमी द्वार पर इंद्रजित से युद्ध करेगा और मैं स्वयं उत्तरी द्वार पर तैयार खड़े रावण से युद्ध करूंगा। मेरे साथ लक्ष्मण भी रहेगा। सुग्रीव, जांबवान और विभीषण मध्य सेना का मुकाबला करेंगे। युद्ध के समय वानरों को मानव-रूप धारण नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से यह आसानी से पता चल जायेगा कि कौन किस तरफ है। हां, मैं, लक्ष्मण, हनुमान्, सुग्रीव, नील, अंगद और विभीषण-सब मानव-रूप में रहेंगे।"

इस प्रकार सब को अपना-अपना मोर्चा देने के बाद राम और लक्ष्मण सुवेल पर्वत पर चढ़ने लगे। सुवेल पर्वत बहुत ही सुंदर था। उन के साथ विभीषण आदि भी थे। वह रात वे वहीं बिताना चाहते थे। सुवेल पर्वत से त्रिकूट पर्वत पर बनी लंका नगरी बहुत अच्छी तरह दिखाई दे रही थी। लंका नगरी ही नहीं, बल्कि उसमें रहने वाले राक्षसों को भी राम बहुत अच्छी तरह देख पा रहे थे। वानरों का नीचे सिंहनाद करना जारी था।

सूर्यास्त हो गया था। अपने पूर्व निर्णय के अनुसार वह रात उन्होंने सुवेल पर्वत पर ही बितायी। सुबह हुई तो उन्हें लंका के वन-उपवन दिखने लगे। वे बहुत ही मोहक थे। समूची लंका में रावण का महल ही सबसे ऊंचे स्थल पर बना हुआ था। उसके चारों ओर ऊंची चारदीवारी थी।

इतने में सुग्रीव को रावण दिख गया। वह वहीं कहीं घूम रहा था। उसने उसे दूर से ललकारते हुए कहा, "हे रावण, मैं
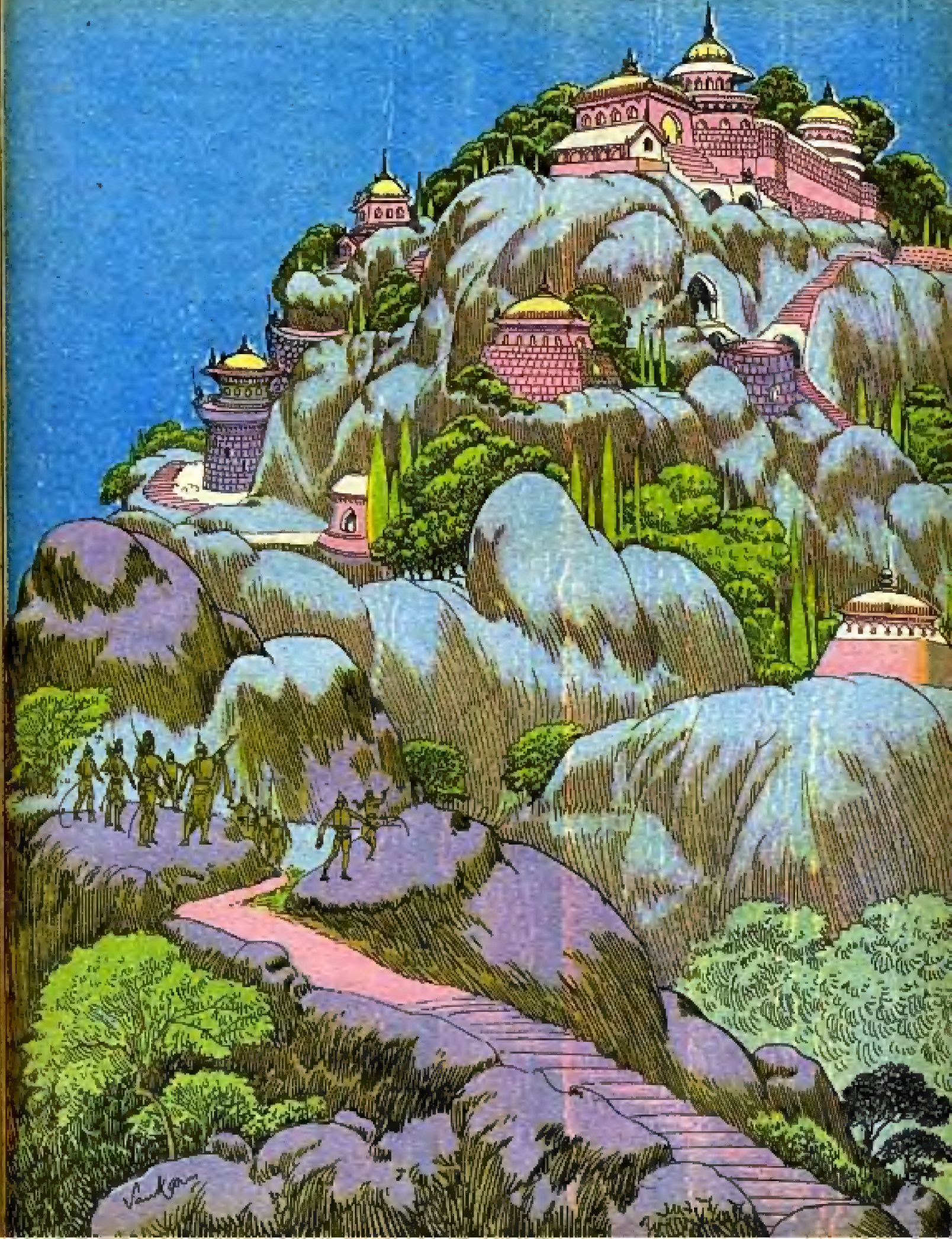
राम का मित्र हूं। उसका मैं सेवक भी हूं। मैं तुम्हें ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा।"

रावण अब काफी निकट आ गया था। उसने सुग्रीव की चुनौती झट से स्वीकार कर ली थी।

वह बोला, "सुग्रीव कौन होता है, जानते हो? अच्छी गर्दन वाला। मैं तुम्हारी गर्दन तोड़ कर तुम्हारे हाथ पर रख दूंगा।" और यह कह कर वह सुग्रीव पर कूद पड़ा और दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा।

बहुत देर तक दोनों समान रूप से लड़ते रहे। धीरे-धीरे रावण थकने लगा। अब उसने अपना इंद्रजाल फैलाना शुरू किया। सुग्रीव उसकी चाल समझ गया। वह तुरंत आकाश में उड़ गया। रावण ने सोचा कि वह लौटकर आयेगा, लेकिन सुग्रीव राम की बगल में जाकर खड़ा हो गया।

राम ने सुग्रीव को डांटा और बोले, "मुझ से कहे बिना तुमने ऐसा क्यों किया? तुम राजा हो। राजाओं को ऐसा दुःसाहस नहीं करना चाहिए। हम तो चिंतित हो गये थे। सोच रहे थे जाने कौन सी विपत्ति टूटने वाली है। तुम्हें कुछ हो जाता तो हमारा क्या होता? हम तो रावण को उसके सगे-संबंधियों सहित समाप्त करके विभीषण को सिंहासन पर बैठाने का संकल्प लिये हुए हैं। तभी हम अयोध्या लौटेंगे।

"हे राम। सीता को अपनी माया से धोखे में लेकर, उसे उठा ले जाने वाले रावण को देखते हुए भी मैं कैसे यों ही जाने देता। मैं चुप रह ही नहीं सकता था।" सुग्रीव ने कहा।

अब सब पर्वत से नीचे उतर आये थे। राम लंका पर जल्दी से जल्दी चढ़ाई कर देना चाहते थे। उनके पीछे विभीषण, सुग्रीव, हनुमान, जांबवान, नल, सुसेण, नील और लक्ष्मण चले आ रहे थे और उनके पीछे सागर-सी लहराती वानर सेना थी।

राम-लक्ष्मण ने लंका के उत्तरी द्वार पर आक्रमण कर दिया। उसकी सुरक्षा स्वयं रावण कर रहा था। वहां अपार राक्षसी सेना के साथ-साथ बहुत भारी मात्रा में आयुध-शस्त्र भी थे।

घर की ज़िम्मेदारी

एक गांव में दंडपाणि नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसकी पत्नी का नाम भद्रा था। उनके चार बेटे थे। चारों का विवाह हो चुका था और बहुएं, घर में आ चुकी थीं। पर समूचे घर का संचालन, सार-संभाल भद्रा स्वयं ही करती थी, और इस काम में वह बहुत होशियार थी।

भद्रा बूढ़ी हो चुकी थी। उसे अब एक ही चिंता सता रही थी—अब तक तो घर का संचालन वह स्वयं करती आयी थी, उसके बाद कौन करेगा? उसकी चारों बहुओं में से कौन समर्थ है इस जिम्मेदारी को संभालने में?

अपनी पत्नी की चिंता के बारे में दंडपाणि को भी पता चल गया। उसे एक युक्ति सूझी। उसने अपनी चारों बहुओं को बुलवाया और उन्हें एक-एक मुट्ठी धान के बीज देते हुए कहा कि इन्हें वे सुरक्षित रखें और वह जब इन्हें वापस मांगे, तुरंत लौटा दें।

चारों बहुएं धान के बीज लेकर अपने-अपने कक्ष में चली गयीं। सब से बड़ी बहू का नाम उज्झिका था। उज्झिका ने सोच, मुट्ठी-भर धान! यह होता ही क्या है? घर में इतना अनाज पड़ा है। ससुर जी जब भी मांगेंगे, उठाकर दे दूंगी। अब वह इत्ते से धान को कहां संभालकर रखे! इसलिए उसने उसे घर के पिछवाड़े में फेंक दिया।

दूसरी बहू का नाम भोगवती था। उसकी सोच भी कुछ-कुछ उज्झिका की सोच जैसी थी, देखो, हमारे ससुरजी की बात। इत्ते से धान को कहां संभालते रहेंगे! इसलिए कुछ दाने छीलकर उसने अपने मुंह में डाले और बाकी पक्षियों को खिला दिये।

तीसरी बहू, रक्षिका, हर बात में सावधानी

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

बरतती थी । उसने धान के उन दानों को एक पोटली में बांधा और उन्हें एक बक्से में सुरक्षित रख दिया ।

चौथी बहू, रोहिणी, हमेशा दूर की सोचती थी । उसे लगा, ससुर जी मुट्ठी-भर धान को सुरक्षित रखने के लिए तो कहेंगे नहीं, ज़रूर ये बोने के लिए होंगे । इसलिए उसने उन्हें अपने मायके भिजवा दिया और कहला भेजा कि इनकी बुआई कर दी जाये ।

रोहिणी के मायके वालों ने धान के उन दानों की बुआई करवा दी । होते-होते उनके पौधे उग आये । फिर उनकी फसल भी काटी गयी । अगले वर्ष उस फसल से प्राप्त हुए समूचे धान को फिर से बो दिया गया ।

इसी प्रकार पांच साल बीत गये ।

भद्रा अब तक और बूढ़ी हो चुकी थी । इसलिए एकदिन उसने अपने पति से कहा, "मेरी हालत देख रहे हो न । मुझ से अब यह गृहस्थी नहीं संभाली जाती । आप कुछ निर्णय लेने जा रहे थे । निर्णय लेते-लेते ही पांच वर्ष बिता दिये । अब तो आप कुछ न कुछ कीजिए ।"

पत्नी की बात सुनकर दंडपाणि ने फौरन अपनी बहुओं को बुलवाया और उनसे कहा कि वे पांच वर्ष पहले दिये गये धान के बीज उसे लौटा दें ।

उज्जिका और भोगवती भीतर गयीं और धान्यागार से एक-एक मुट्ठी धान के बीज ले आयीं ।

धान के उन बीजों को देखकर दंडपाणि चौंका और फिर धीरे से बोला, "क्या यही बीज मैंने तुम दोनों को दिये थे? उनका तो रंग-रूप ही दूसरा था । वे तो नये धान जैसे चमक रहे थे ।"

ससुर की बात सुनकर दोनों बहुएं चुप रहीं । अब वे कहें भी तो क्या कहें । दंडपाणि ने उन्हें ज़ोर से डांटा और पूछा, "बोलो, क्या किया तुम दोनों ने उन बीजों का?"

लाचार होकर उज्जिका और भोगवती को उत्तर देना ही पड़ा । उन्होंने उन बीजों के साथ जो कुछ किया था, वह बता दिया ।

तीसरी बहू, रक्षिका ने अपने बक्से में रखी एक पोटली निकाली, और उसे अपने ससुर की ओर बढ़ा दिया । उसमें वही पुराने बीज थे जो इतने समय तक यों ही

पड़े-पड़े काले पड़ गये थे ।

चौथी बहू, रोहिणी, की बारी आयी तो उसने बताया कि उसने वे बीज अपने मायके भेज दिये थे, और उन्हें वापस मुलवाने में कुछ समय, यानी दो दिन, तो लगेंगे ही । इसलिए उसने दो दिन की मोहलत चाही जो उसे दे दी गयी ।

दो दिनों में रोहिणी के यहां से धान की कई गाड़ियां लदकर आ गयीं । धान बोरों में भरा हुआ था । सब बोरे दंडपाणि के यहां उतारे गये । बोरों को देखकर दंडपाणि चकित रह गया । पांच वर्ष पहले जो एक मुट्ठी भर धान रोहिणी को दिया गया था, उसके बदले कई बोरे धान उसके यहां आ गया था ।

दंडपाणि की पत्नी, भद्रा, को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था । दंडपाणि ने कहा, "अब भी तुम्हें कोई शक है कि समूचे घर की ज़िम्मेदारी किसे सौंपी जाये? रोहिणी के हाथों में घर की हर चीज़ सुरक्षित है।"

"और बाकी तीन का क्या होगा?" भद्रा ने विस्मय से पूछा ।

"बाकी तीन? उन्हें भी कोई न कोई ज़िम्मेदारी मिलेगी ही," दंडपाणि ने सरलता से उत्तर दिया । "उज्जिका को जो चीज़ बेकार लगे, उसे वह घर के पिछवाड़े फेंक आती है । इसलिए इसे घर की सफाई की ज़िम्मेदारी दे दी जाये । भोगवती के हाथ में जो चीज़ आती है, उसे वह चखकर अपने अनुभव पर उतारना चाहती है । इसलिए इसे रसोईघर की ज़िम्मेदारी मिलनी चाहिए अब रही रक्षिका की बात । वह हर चीज को सुरक्षित रखती है । इसलिए इसे दुकान संभालनी चाहिए । बोलो, क्या कहती हो तुम?"

पति की बात सुनकर भद्रा हंस दी । उसे दंडपाणि का निर्णय बहुत पसंद आया । हर बहू को अपनी-अपनी तरह की ज़िम्मेदारी मिल गयी थी । इसलिए पति-पत्नी चिंतामुक्त हो गये थे । अब वे पूजा-पाठ में ही अपना अधिकांश समय बिताते थे ।
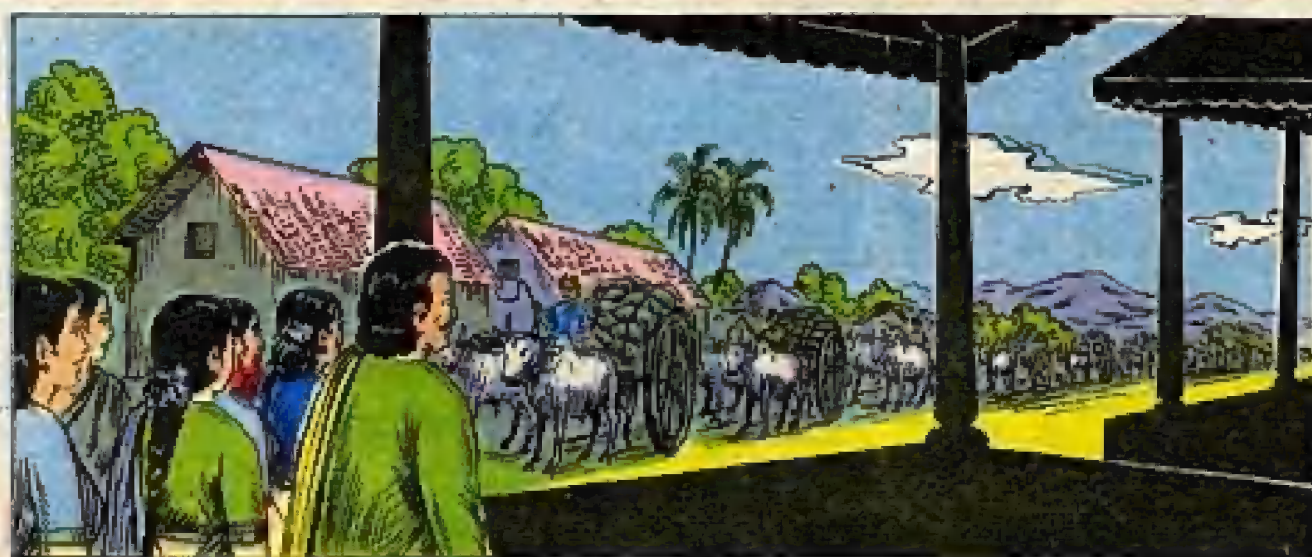
छुटकारा मिल गया

रामपुर के ज़मींदार रघुवीर के अनेक दोस्त थे। वे वक्त-बेवक्त उसी के यहां धरना दिये रहते जिससे रघुवीर बहुत परेशान हो उठा था। दोस्त थे, आखिर, उनसे कहता भी क्या। लेकिन दोस्त अपनी सीमा नहीं पहचान रहे थे। उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि वे अपने मित्र को कितना कष्ट पहुंचा रहे हैं।

होते-होते ज़मींदार की जान पर बन आयी। उसकी सहन-शक्ति खत्म हो गयी। आखिर उसने एक दिन अपने दीवान को बुलवाया और उसे अपने मन की उलझन बतायी।

दीवान बड़ा समझदार व्यक्ति था। उसने ज़मींदार को आश्वस्त किया कि वह इस समस्या का शीघ्र ही कोई हल ढूंढेगा।

अगले दिन भी ज़मींदार रघुवीर अपनी मित्र मंडली से वैसे ही घिरा हुआ था। इतने में वहां एक व्यक्ति आया। वह सफेद कुर्ते-धोती में था। रघुवीर उसे देखते ही फौरन उठ खड़ा हुआ और उसकी अगवानी के लिए आगे बढ़ा। उस नवागंतुक से रघुवीर की बस, दो टूक बात हुई और वह जाने को तैयार हो गया। "मैं तुम्हारा ज़्यादा समय नहीं लेना चाहता। मैं समझता हूं तुम्हारा समय बहुत कीमती है। इसलिए अब मुझे इजाज़त दो।" उस नवागंतुक ने रघुवीर से कहा।

रघुवीर ने सहमति में अपना सर हिला दिया और उसे विदा करने के लिए उठ खड़ा हुआ। फिर वह उसे छोड़ने बाहर तक गया।

रघुवीर की वह मित्र मंडली यह सारा कौतुक देख रही थी। रघुवीर ने आज तक तो कभी उनकी अगवानी नहीं की थी, और न ही वह कभी उन्हें छोड़ने उनके साथ

रत्ना श्रीवास्तव

बाहर तक गया था ।

यह व्यक्ति कौन हो सकता है?-रघुवीर के मित्र आपस में फुसफुसा रहे थे । क्या कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जिन्हें ज़मींदार इतना मान-सम्मान देता है?

रघुवीर का दीवान भी वहीं था । मित्रमंडली की बात सुनकर वह बोला, "मुझे भी ज़मींदार के व्यवहार पर ताज्जुब हो रहा है । पर हो सकता है यह व्यक्ति अमरेंद्र हो । मैंने ज़मींदार के मुंह से उसका कई बार ज़िक्र सुना है । वह शहर में रहता है । ज़मींदार उसी के नाम की रट लगाये रहता है ।"

"क्या कहा, अमरेंद्र?" अब वे सब मित्र एकसाथ बोले । "पहले तो इसका नाम हमने कभी नहीं सुना । अच्छा, अब हमें यह तो बताओ, क्या कहता है ज़मींदार अक्सर इसके बारे में?"

"अजी साहब, कोई खास बात नहीं ।" दीवान बोला, "बस, इतना ही कि यह व्यक्ति अपनी मार्यादा बहुत अच्छी तरह समझता है । किसी के घर जाता है तो जानता है कि उसे वहां कितनी देर तक रुकना है । और यह भी कि बड़े से बड़े काम के लिए भी कितना समय लेना चाहिए । काम की बात की और इजाज़त लेकर वहां से चल पड़े । यह इस व्यक्ति की बहुत बड़ी खूबी है । इसलिए ज़मींदार इसकी बहुत इज़्ज़त करता है और हर वक्त इसका गुणगान करता रहता है ।"

दीवान की बात सुनकर ज़मींदार के दोस्त सोच में पड़ गये । उन्हें उसकी बात में
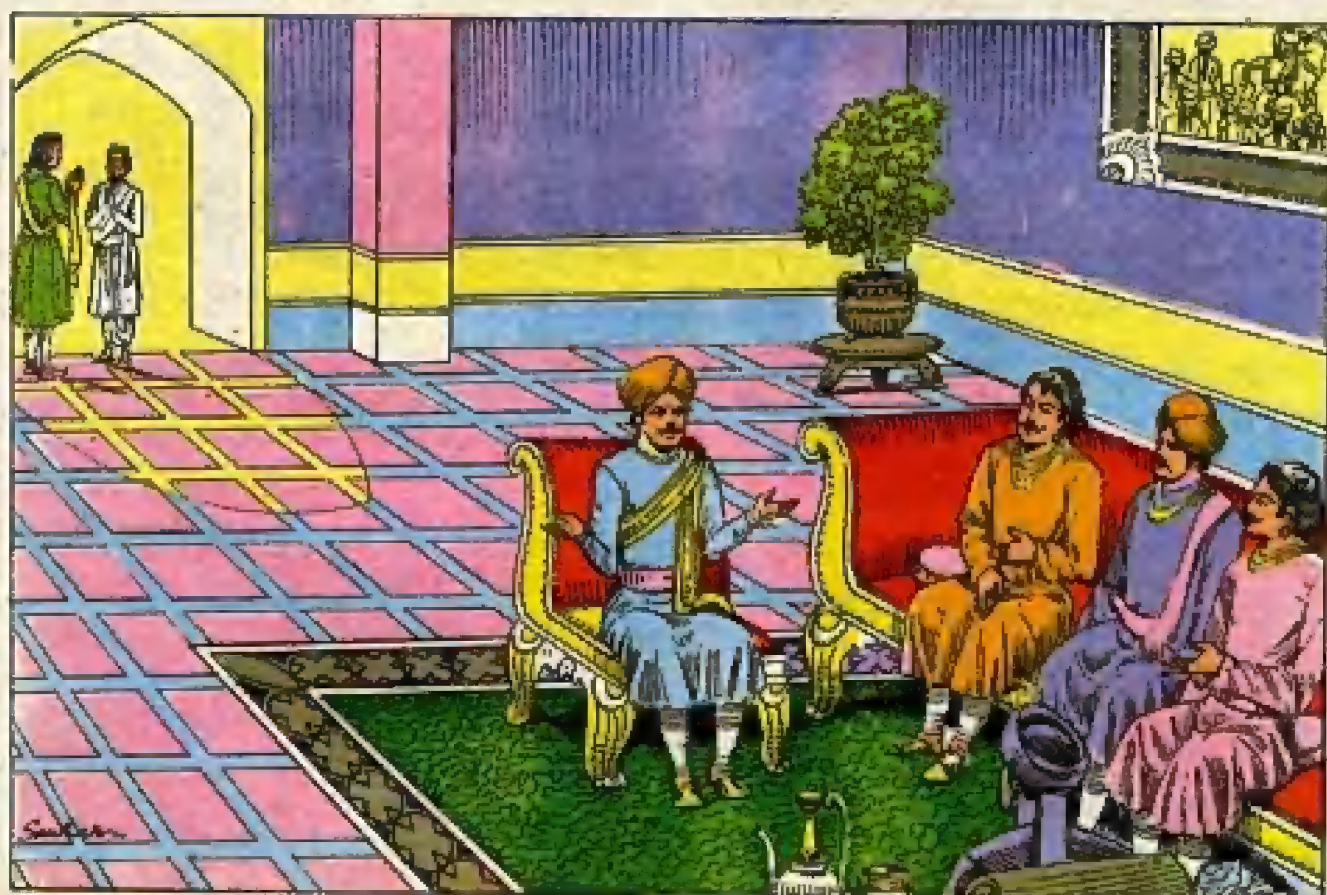
सच्चाई दीख पड़ी। उसी क्षण वे सब एकसाथ उठे और बाहर की ओर जाने को हुए।

ज़मींदार अपने उस मित्र को विदा करके लौट आया था। उसने अपने सभी मित्रों को एकसाथ उठते देखा तो हंसते हुए बोला, "अरे भाई, आप लोग सब इतनी जल्दी कहां चल दिये?"

मित्रों को उस समय कुछ खास नहीं सूझा। वे चुप रहे। फिर उनमें से एक बोला, "अरे, अपने वह वर्मा जी हैं न। वह आज राजधानी के लिए रवाना हो रहे हैं। हमें उन्हें छोड़ने जाना है। फिर उनसे कुछ ज़रूरी बातें भी करनी हैं। इसलिए हम सब वहीं जा रहे हैं। अभी नहीं गये तो उनसे मिल पाना मुश्किल हो जायेगा। आप हमें इजाज़त दीजिए।" और ज़मींदार को जल्दी नमस्कार कहकर वे सब लोग वहां से रफा-दफा हो गये।

वे लोग जा रहे थे तो ज़मींदार उन्हें मंद-मंद मुस्कराता हुआ देखता रहा। उसका दीवान भी उसके पास वहीं खड़ा था।

"दीवान जी, आपकी युक्ति काम कर गयी।" ज़मींदार ने कहा, "सच, आपने मुझे बहुत बड़े झमेले से छुटकारा दिलाया। दरअसल, दुनिया की यह रीत ही है। आप यदि किसी ऊंचे पद पर हैं या आप पैसे वाले हैं, तो दोस्ती के नाम पर कई लोग आप के इर्द-गिर्द मंडराने लगते हैं और आपका समय बरबाद करते हैं। ऐसे चाटुकारों से पिंड छुड़ाना कोई आसान काम नहीं। उसके लिए बड़ी बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है। आपके इस नाटक ने उन्हें अपनी भूल का एहसास कराया और मुझे इस झमेले से छुटकारा दिलाया।... अच्छा, भला वह व्यक्ति कौन था जिसे आपने बुलाया था? अमरेंद्र की भूमिका उसने बढ़िया निभायी। वह तो पुरस्कार का हकदार है। बुलवाइए उसे।"

ज़मींदार रघुवीर की प्रतिक्रिया जानकर दीवान अपने भीतर ही भीतर बहुत खुश हुआ। "ज़रूर बुलवाऊंगा उसे।" उसने कहा और फिर विनम्रता से हंस दिया।
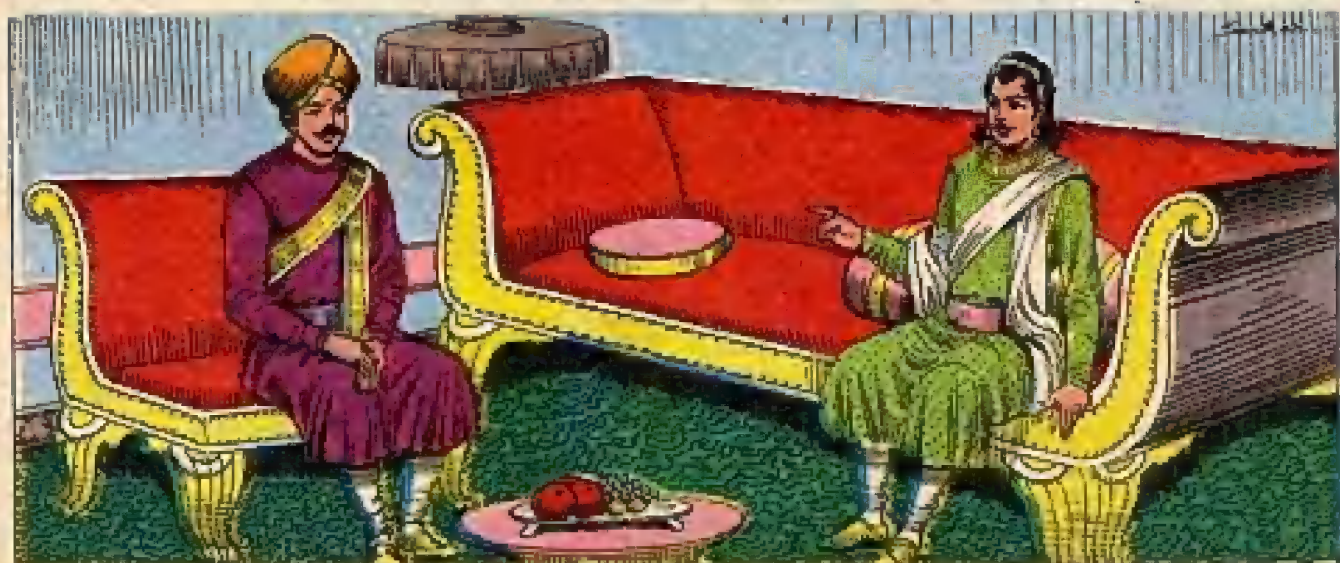
इमली नहीं, नीम

काफी पहले की बात है। मलय राज्य (अब केरल) में जामोरिन वंश के राजा का राज था। एक बार उसके मन में आया कि समूचे राज्य में इमली के पेड़ लगवाये जायें और इमली के ही बगीचे हों। इससे राज्य में खूब धन बरसेगा। बस, फिर क्या था—काम शुरू हो गया।

उसी राज्य में नंबियार नाम का एक वैद्य था। उसकी चारों तरफ ख्याति थी। उन्हीं दिनों दिल्ली के शाहंशाह के यहां एक बहुत बड़ा हकीम था। उसे प्राकृतिक चिकित्सा में बहुत ख्याति मिली थी। कहने वाले तो यही कहते थे कि नंबियार और हकीम, दोनों ही अपनी-अपनी तरह से बेजोड़ हैं।

इधर नंबियार को पता चला कि राजा समूचे राज्य में इमली के पेड़ लगवा रहा है। वह बहुत चिंतित हुआ और राजा के पास पहुंचकर कहा, "इमली के पेड़ स्वास्थ्य के लिए अच्छे नहीं होते। इनसे कई बीमारियां फैल सकती हैं। यदि आप नीम के पेड़ लगवायेंगे तो इनसे बीमारी पास भी नहीं फटकेगी, और आपकी प्रजा स्वस्थ रहेगी।"

लेकिन जामोरिन पर तो अपनी धुन सवार थी। वह नहीं माना। बोला, "इमली के पेड़ों के अनेक लाभ हैं। इमली की लकड़ी का कोयला बहुत बढ़िया होता है। इमली के डंठल की दातुन लाजवाब होती है। इमली के कोमल पत्ते और फूल बड़े स्वादिष्ट होते हैं। मार्ग के दोनों तरफ यदि इमली के पौधे लगा दिये जायें तो इन पेड़ों की छाया में राहगीरों को कितनी राहत मिलेगी! अब नीम के पेड़ का इससे मुकाबला करो। वह कहीं भी नहीं ठहरता।"

राजा की बात सुनकर नंबियार बेचारा अवाक् रह गया। मजबूर होकर वह मंत्री

मलयालम की लोककथा
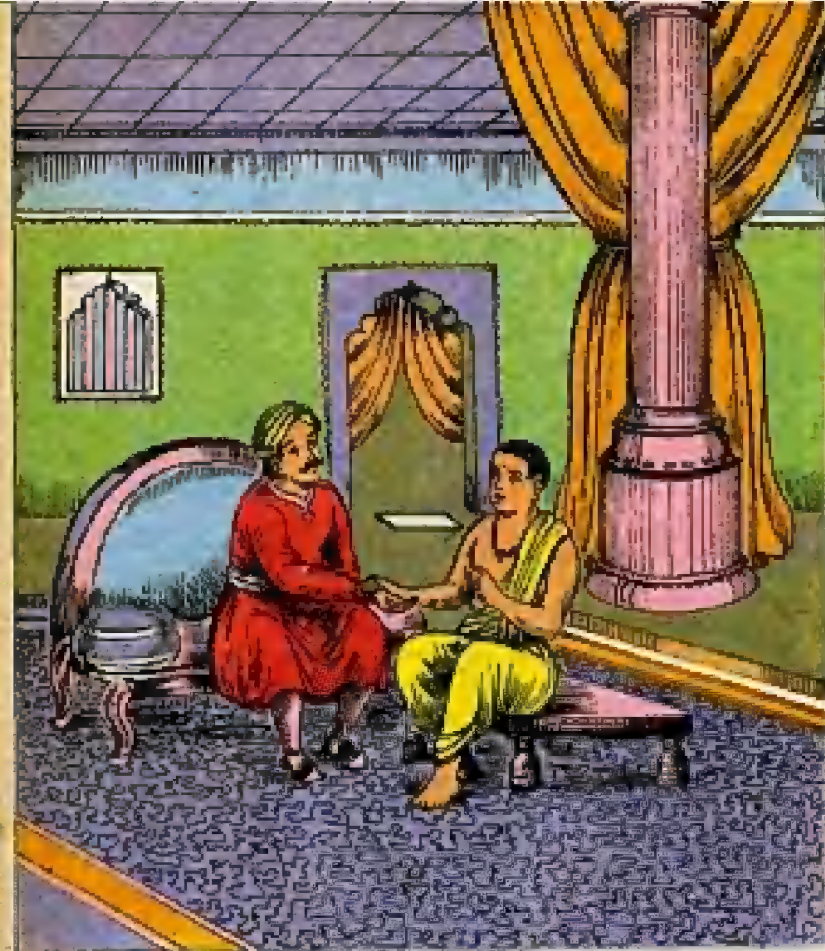
के यहां पहुंचा। मंत्री ने उसका भरपूर स्वागत किया। नंबियार उसकी ओर गौर से देखने लगा। मंत्री हैरान हुआ। पर नंबियार अब उसकी आंखें देख रहा था, और फिर उसकी नब्ज़।

नंबियार की ऐसी हरकत पर मंत्री हंसने लगा और बोला, "यह क्या, नंबियार! क्या देख रहे हो? मेरा स्वास्थ्य तो ठीक है न?"

नंबियार का स्वर गंभीर था। कहने लगा, "अभी तो आप ठीक हैं, पर छः महीने बाद देखिएगा। आपको कोई भयंकर बीमारी घेरने वाली है।"

नंबियार की बात सुनकर मंत्री घबरा गया। बोला, "ऐसी बात है तो अभी से इलाज शुरू किये लेते हैं।"

"पर इस रोग का इलाज मेरे बस का नहीं। आपको इसके लिए दिल्ली जाना होगा। वहां शाहंशाह का नामी हकीम है। वही आपका इलाज करेगा।" नंबियार ने संक्षेप में उत्तर दिया।

नंबियार के सुझाव से मंत्री घबरा गया। बोला, "पहले तो इतनी दूर पहुंचना कोई आसान काम नहीं। दूसरे, मैं वहां पहुंचूं भी, और वह मेरी तरफ ध्यान ही न दे। तब तो बड़ी मुश्किल हो जायेगी।"

"वह ऐसा हकीम नहीं है," नंबियार ने उत्तर दिया। "वह छोटे-बड़े में भेद नहीं करता। आप, बस, तैयार होकर फौरन रवाना हो जायें।"

जब मंत्री निकलने को था तो नंबियार ने एक सलाह और दी, "रास्ते में इमली के पेड़ों के नीचे विश्राम कीजिएगा। इमली के बगीचों में रुकिएगा। और हां, इमली के डंठलों की ही दातुन कीजिएगा और इमली की लकड़ियां जलवाकर ही अपना खाना बनवाइएगा।"

नंबियार की हिदायतें गिरह बांधकर मंत्री अपने परिवार के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गया। लेकिन अभी दिल्ली दूर ही थी कि उसकी तबियत बिगड़ने लगी, और बिगड़ते-बिगड़ते ऐसी नौबत आयी कि वह बेहद कमज़ोर हो गया और उसके शरीर का रंग भी पीला पड़ गया।

'वाकई, नंबियार ग़ज़ब का वैद्य है। इतना अर्सा पहले ही उसे मेरी बीमारी का पता चल गया था।' मंत्री ने सोचा।

हकीम से मुलाकात करने में मंत्री को कोई दिक्कत नहीं हुई। फिर मंत्री से जब उसने उसकी बीमारी के बारे में सुना, तो वह फौरन समझ गया कि इमली के पेड़ों से होने वाले नुक्सान से आगाह करने के लिए ही नंबियार ने उसे उसके पास भेजा है।

"आपकी बीमारी मामूली नहीं है," हकीम ने उसे समझाते हुए कहा, "लेकिन उसका इलाज बहुत ही आसान है।"

"तो मुझे फौरन बताइए," मंत्री ने उतावली में कहा। "मैं उम्र भर आपका एहसानमंद रहूंगा।"

"आप बिना देर किये वापस अपने राज्य को लौट जायें। लौटते वक्त एक बात का खास ख्याल रखें। आप जब भी आराम करें, नीम के पेड़ के नीचे करें। जहाँ भी रुकें, वहां देख लें कि वह नीम का बाग़ीचा हो। हवा करने की ज़रूरत पड़े तो नीम के पत्तों का पंखा बनाकर उसी से हवा करें। सोते वक्त ख्याल रखें कि जो हवा आपकी तरफ आये, वह नीम के पेड़ों से होकर आये। बस, यही आपका इलाज है। नंबियर साहब को मेरा हजार सलाम कहिएगा। अब आप शौक से रवाना हो सकते हैं।" हकीम ने मंत्री को रुखसत देते हुए कहा।

अगर यही इलाज मंत्री को कोई और बताता, तो उसे उस पर कभी विश्वास न होता। लेकिन यह इलाज तो स्वयं शाहंशाह के हकीम ने बताया था, और चारों तरफ उस हकीम की शोहरत थी। इसलिए लौटते वक्त वह बराबर नीम के पेड़ों का साया ही ढूंढ़ता रहा, और उन्हीं के नीचे विश्राम

करता रहा। नीम के पेड़ों से आती हवा ने जादू का सा असर किया, उसका स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधरने लगा।

आखिर, वह अपने राज्य को लौट आया और अब तक वह पूरी तरह स्वस्थ हो चुका था। नंबियार को जैसे ही पता चला कि मंत्री लौट आया है, वह उससे मिलने गया। मंत्री ने शुरू से आखिर तक नंबियार को अपने अनुभव कह सुनाये।

"मैं चाहता हूं कि आपके अनुभव एक बार जामोरिन भी सुनें। यह बहुत ज़रूरी है।" नंबियार ने कहा।

मंत्री ने नंबियार की बात मान ली और दोनों राजा के यहां गये। मंत्री के अनुभव सुनकर राजा हक्का-बक्का रह गया। तब नंबियार बोला, "मुझ से, दरअसल, बहुत बड़ा अपराध हुआ है। मुझे आप दोनों क्षमा करें," वह थोड़ा रुका और कहता गया, "मंत्री जी को कोई बीमारी नहीं थी। मैं इमली के पेड़ों के दुर्गुणों के बारे में आपको चेताना चाहता था, पर आप मेरी बात सुनने को तैयार न थे। इसीलिए मैंने मंत्री जी को दिल्ली भेजने की योजना बनायी। जब इन्हें दिल्ली भेजा, तब इन्हें यह सलाह भी दी कि यह बराबर इमली के पेड़ का ही आश्रय लें, उसी के नीचे विश्राम करें, उसी की हवा खायें और उसी के फूल-पत्तों का सेवन करें। इससे इनका स्वास्थ्य गिर गया। हकीम साहब इस असलियत को फौरन ताड़ गये। उन्होंने इन्हें नीम के पेड़ों का आश्रय लेने की सलाह दी। परिणाम आप देख ही रहे हैं। अब मेरी आप से यही प्रार्थना है कि आप अपने राज्य में इमली के पेड़ लगवाने का इरादा छोड़ दें। इससे लोगों को बहुत हानि पहुंचेगी। इमली के पेड़ के बजाय आप नीम के पेड़ लगवायें।"

जामोरिन चुपचाप नंबियार की बात सुनता रहा। फिर उसने तुरंत आदेश जारी किया कि इमली के पेड़ लगाना रोक दिया जाये और उनकी जगह नीम के पेड़ लगाये जायें। इस तरह राज्य की प्रजा का स्वास्थ्य नष्ट होने से बच गया।
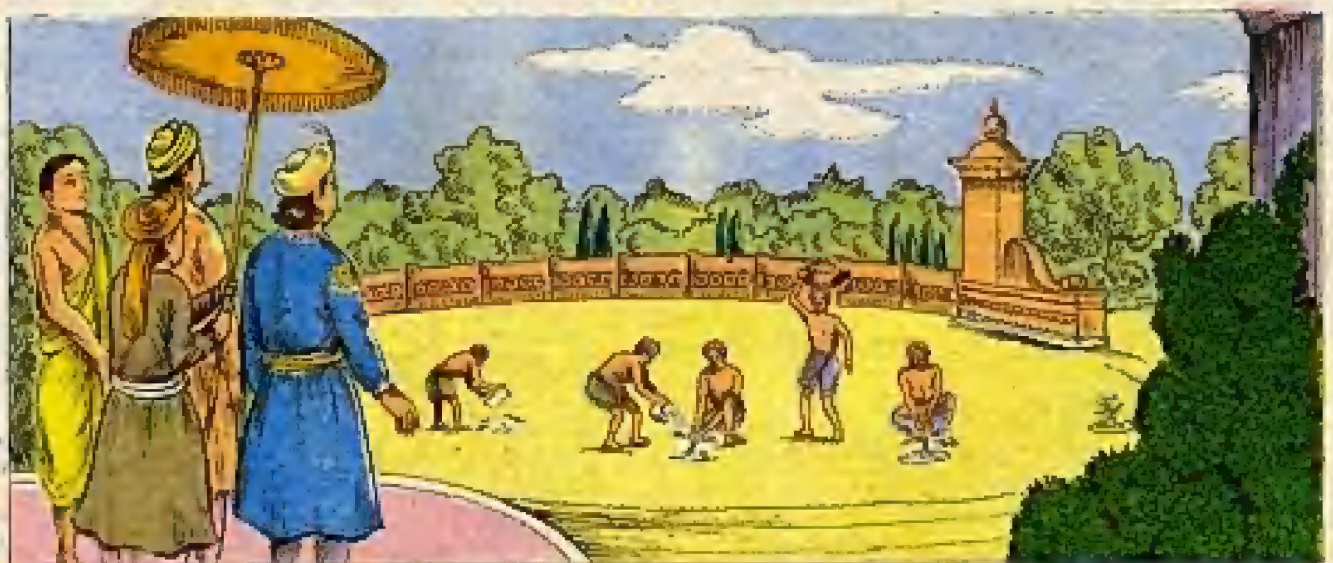
नाग और मनुष्य

क्या वह काला नाग अपने किसी पहले जन्म में मनुष्य था? इस बात को लेकर कुछ लोगों को हैरानी हो रही थी। वह एक छः फुट लंबा काला नाग था। उसे तीन-चार महीने पहले कुंबकोनम के पास वलंगाइमन में पकड़ा गया था। उसके फन पर कुछ ऐसे चिह्न थे जो बिलकुल मनुष्य के चेहरे की आंखों, भौहों, नाक और मुंह से मिलते थे।

बौना दरियाई घोड़ा

दरियाई घोड़ों में भी बौने दरियाई घोड़े होते हैं। ये अधिकतर अफ्रीका के नीची सतह वाले जंगलों में पाये जाते हैं, विशेषकर नाइजीरिया में, जहां इसकी नस्ल को खतरा पैदा हो गया है। इस जीव की ऊंचाई ७५ सें. मी. तक रहती है, जबकि साधारण दरियाई घोड़े की ऊंचाई इससे दुगुनी, यानी १५० सें. मी. होती है। और इसकी लंबाईः २.५ मीटर। ये बौने दरियाई घोड़े दलदल में रहते हैं। साधारण दरियाई घोड़े रात के समय घास के मैदानों में घूमते हैं और दिन में पानी के पास रहते हैं। लेकिन बौने दरियाई घोड़े इसके ठीक विपरीत चलते हैं। ये घोड़े जड़ें, घास, नये पौधे और फल खाते हैं।

बस्टर्ड

भारत के पक्षी-प्रेमी इस बात से खुश हैं कि ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (सोहन चिड़िया) नाम का पक्षी, जिसे एक समय संकटास्पद समझा जाता था, आंध्रप्रदेश के करनूल जिले के जंगलों में कई वर्षों बाद देखा गया है। अपनी तरह का यह दुर्लभ पक्षी पहले राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में पाया जाता था। जबसे संरक्षण योजना शुरू हुई है, रायलसीमा क्षेत्र में कोई चालीस पक्षियों ने अपना ठिकाना बनाया है। इस पक्षी की ऊंचाई लगभग एक मीटर होती है और यह टिड्डों, अंखफोड़वों, छिपकलियों, कनखूजरों को खाता है।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० अप्रैल '९२ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

फरवरी १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : कितनी प्यारी, मेरी सवारी!

द्वितीय फोटो : पहले मम्मी, फिर मेरी बारी!!

प्रेषक : चन्द्रशेखर यादव, २८१/१३९, कानपुर रोड़, मवइय्या, लखनऊ

पुरस्कार की राशि रु. ५०/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी।

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.